समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अप्रैल २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक ४ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल का सम्मान समारोह

महामहिम प्रतिभा पाटिल सम्मान गोष्ठी कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई। बाएं से हैं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान एवं पूर्व सांसद महेश चन्द्र शर्मा।

दर्शक दीर्घा में परिलक्षित हैं सर्वश्री दीपचन्द नाहटा, सुनील कानोड़िया, नन्द किशोर जालान, लोकनाथ डोकानिया, अरुण जालान, बंशीलाल बाहेती, आत्माराम सोंथलिया, सांवरमल भीमसरिया, श्रीमती चम्पादेवी कानोड़िया, राम गोपाल बागला, नवरतनमल सुराना आदि सहित सम्मेलन के विभिन्न पदाधिकारीगण, सदस्यगण एवं समाज के विशिष्ट प्रबुद्धजन।

पाँच लाख चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट्स में सर्वोच्च पद प्राप्त एवं स्वर्ण पदक प्राप्त श्री घनश्याम पुरोहित को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत करते सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।

बायीं ओर परिलक्षित हैं संयुक्त महामंत्री श्री रामऔतार पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका।

समारोह में उपस्थिति का एक अंश

(दाएं से) सर्वश्री नरसिंह लाल गुप्ता, प्रेम सुरेलिया, विवेक भोतिका, शिवकुमार पुरोहित (श्री घनश्याम पुरोहित के पिता), रामगोपाल थानवी, वेद मित्र व्यास, अशोक रंगा, श्रीमती उषा पुरोहित, रतनलाल व्यास, जयदीप भट्टाचार्य आदि।

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
सम्पादकीय / *श्री नन्दकिशोर जालान*	५-६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
म्हारो राजस्थान / *श्री भानीराम सुरेका*	८-९
कविताएं : मोरिया तू क्यों नाचे रे, हे मानव / *श्रीराम गोपाल सर्राफ*	
साम्बर या वर्तमान सरकार / *डा. प्रमोद अग्रवाल*	
साथ लड़ेंगे / *श्री संदीप जैन*	९
सेठ जी और मालवीय जी / *श्री पुष्कर लाल केडिया*	१०
राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की नववर्ष शुभकामना	१०
भिन्न-भिन्न धार्मिक मान्यताएं / *श्री बालकृष्ण गोयनका*	११-१२
हमारा मारवाड़ी समाज / *श्री युगल किशोर चौधरी*	१२
बदलते समीकरणों में नेतृत्व की भूमिका / *डा. श्याम सुन्दर हरलालका*	१३
कविता : काम की पूजा / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान*	१३
प्रश्न : नारी का सशक्तिकरण, कल, आज और आगे / *श्रीमती सरोज गुटगुटिया*	१४
बिजूका / *डा. गुलाब चन्द कोटड़िया*	१५-१६
आपका व्यक्तित्व आपका अस्तित्व / *श्रीमती अनिता अग्रवाल*	१७
संगठन ही शक्ति है / *श्री रतनलाल राठी*	१७-१८
कविता : एक नया विश्वास / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान*	१८
क्या आप सफल होना चाहते हैं ? / *डा. सुशील पोद्दार*	१९
प्यार करें संगठन और नेतृत्व से - राजस्थान फाउण्डेशन कोलकाता चेप्टर	
मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे से सम्मेलन के प्रतिनिधि गणों की बातचीत	२०

युग पथ चरण

- राजस्थान की राज्यपाल प्रतिभा पाटिल सम्मान गोष्ठी
- घनश्याम पुरोहित का सम्मान
- मारवाड़ी सम्मेलन भवन की द्वितीय वर्षगांठ सहित बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर पश्चिम बंग, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तीय समाचार एवं युवा मंच की महत्वपूर्ण गतिविधियां

२१-३४

समाज विकास

अप्रैल, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ४

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

फरवरी अंक में 'कल की नहीं, आज की' द्वारा सम्पादक ने सामाजिक चिंतन की रूपरेखा का उत्कृष्ट विचार समाज के सम्मुख रखा है। समाज में सोये व्यक्ति को एवं समाज को ऐसे लेख प्रेरित करेंगे।

आशा है भविष्य में भी 'समाज विकास' द्वारा ऐसे प्रेरणादायक लेख प्राप्त होते रहेंगे।

- सत्यनारायण तुलस्यान, मुजफ्फरपुर

समाज सेवा के क्षेत्र में आपकी ख्याति अद्वितीय है आपके अलौकिक ऊर्जा के कुछ छींटे हमारे अंचल में पड़े जो गौरीशंकर भैया ने बलांगीर जिले में समाज विकास का अलौकिक लौ को थाम रखा है।

- मोहन अग्रवाल, बलांगीर

समाज विकास का फरवरी अंक पढ़ा। दहेज, अन्तर्जातीय विवाह और विवाह खर्च को लेकर लिखे गए तीन आलेख आज के समाज की आवश्यकता और जागृति का प्रमाण है। सम्मेलन की बढ़ती शाखाएं प्रगति की स्वयं ही द्योतक है।

- डॉ. शंकरलाल स्वामी, बीकानेर

समाज विकास फरवरी अंक मिला। इस साहित्यिक सामाजिक पत्रिका के माध्यम से दूर दराज तक एक सार्थक और रचनात्मक संवाद आप बना रहे हैं। यह सुखद बात है। समाज विकास राजस्थानी भाषा को प्राथमिकता देते हुए रचनाएं प्रकाशित कर रही है यह गर्व की बात है।

- सी.एल. सांखला, कोटा, राजस्थान

समाज विकास मार्च २००५ अंक मिला। यूं तो अधिकांश संस्करण पठनीय व प्रशंसनीय होते हैं किंतु मार्च के अंक में 'पाएं खुशियों का संसार, बच्चों को दे संस्कार' प्रेरणात्मक लगा। बदलती पाश्चात्य सभ्यता की नंगी संस्कृति को जिस पर आधुनिकता की काली छाया के माध्यम से जनमानस में खासकर युवापीढ़ी भ्रमित हो रही है वह चिंतनीय व सोचनीय है।

- डॉ. प्रमोद अग्रवाल (गोल्डी) नैनीताल

भारतवर्ष में निवास करण आलां मारवाड़ी भांया नै कतारबद्ध करण वास्ते थे डाको ओ 'समाज विकास' है नांव सू चेतना जगाण री कोशिश करो हो इणा वास्ते आपै आपरी सारी टीम नै मेरी तरफ सूं घणी घणी शुभकामना।

'मेरो आप संगला सू निवेदन है कि राजस्थानी भाषा न संविधान री ८वीं भाषा री सूची में शामिल करण खातर आपलोग भी आपर स्तर पर राजनैतिक सामाजिक कोशिश करो अर आपणी भाषा नै संविधान में स्थान दिरावो।

- गजेन्द्र शेखावत, बीकानेर

समाज विकास फरवरी २००५ का अंक पाया। 'पूर्वजों का कीर्ति इतिहास बन्द न होने पावे' शीर्षक आलेख पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

- बैजनाथ पवार, चुरू (राजस्थान)

समाज विकास पत्रिका जनवरी अंक मिला। आप लोगों द्वारा मारवाड़ी सम्मेलन अधिवेशन, शरद महोत्सव आयोजित होते रहते हैं पत्रिका में पढ़कर बहुत खुशी हुई। मारवाड़ी सम्मेलन अब तक नेपाल में आप लोगों ने नहीं किया जबकि यहां अपने समाज की तीन बड़ी संस्थाएं हैं, आप जानते ही होंगे। आप विभिन्न स्थानों पर देश-विदेश में सम्मेलन करते हैं क्या उस सम्मेलन में हम भाग ले सकते हैं, मैं भाग लेना चाहता हूं।

शम्भुदयाल झुनझुनवाला, काठमांडू (नेपाल)

समाज विकास फरवरी अंक में अध्यक्ष की कलम से मुझे युवाओं में पारिवारिक सामाजिक संस्कार भरें पढ़कर बहुत खुशी हुई। आदरणीय अध्यक्ष जी सामाजिक एवं ज्ञानवर्द्धक संकलन हेतु बधाई के पात्र हैं।

हमारा समाज एक विशाल समाज है, इसका न तो कभी अस्तित्व समाप्त होगा और न कोई परिवर्तन होगा। समाज को मजबूत और एक करना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे पास वह शक्ति है जो किसी भी समाज के पास नहीं है। एकता की शक्ति दर्पण की तरह साफ है, जो हमेशा साफ दिखाई देती है।

अध्यक्ष जी, हम युवा भी बहुत कुछ कर सकते हैं, हमें परस्पर सहयोग एवं सामंजस्य बनाकर युवाओं के लिए कार्य करने होंगे। युवाओं में भी अधिक से अधिक संस्कारों की जरूरत है।

अध्यक्षजी के लेख के एक-एक शब्द काफी महत्वपूर्ण हैं। आपका लेख पढ़ने के लिए बेसब्री से इंतजार रहता है। काफी कुछ सीखने को मिलते हैं। आप समाज की शान हैं। आप युवाओं को भी अच्छी शिक्षा दें ताकि आगे चलके ये युवा आपके हिसाब से आपके पैर छुए और उनको आनेवाले दिनों में अपनी गलती का खुद एहसास हो। समाज को आपसे बहुत सी उम्मीद है। आशा है हमें समाज का नाम रोशन करेंगे।

- शिवशंकर अग्रवाल, बलांगीर (उड़ीसा)

समाज विकास फरवरी ०५ में आपकी सम्पादकीय चिंतन मनन योग्य अनेक भावकण तथा विचारकण प्रस्तुत करती है। समाज विकास पत्रिका समाज में नई चेतना की हामी भरती है। अन्य आलेख भी प्रेरणादायक हैं। कविताएं भी मनभावन हैं।

- डॉ. मदन केवलिया, बीकानेर

समाज विकास मार्च २००५ अंक प्राप्त हुआ। इसका मैं नियमित पाठक हूं। इस अंक में 'रोना मना है' शीर्ष लेख पढ़ा। इसी अंक में पृष्ठ सं. २४ पर पटनासिटी सम्मेलन से संबंधित समाचार में छपा है ''समाज के कमजोर लोगों को चिन्हित कर, उन्हें क्लेब बीमा के माध्यम से सहायता करना'' प्रमुख था।

- मोहनलाल खेमका, मुंगेर

क्रान्तदर्शी मारवाड़ी युवक २०वीं व २१वीं शताब्दी के तराजू के पलड़े पर किधर

✍ नन्दकिशोर जालान

भारत जैसे विशाल देश में मारवाड़ी का स्थान कहां कैसा है, आज यह प्रश्न गौण हो गया है क्योंकि उद्योग व्यापार, शिक्षा, शोध, संस्कृति व राजनैतिक क्षेत्र में वह अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है। प्रश्न है मारवाड़ी शब्द की उत्पत्ति का। उत्तर दक्षिणी भारत का अरब सागर से सतलज नदी तक एवं मालवा के क्षेत्र सहित का भाग ९वीं से १२वीं शताब्दी तक **नवकोटी मारवाड़** प्रख्यात व अत्यन्त शक्तिशाली राज्य था जो १५वीं शताब्दी तक कई छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गया। फिर भी मारवाड़ के राजा मालदेव से हुई लड़ाई ने शेरशाह की शक्ति को तोड़ डाला था जिसके कारण वह हुमायूं से हार गया था।

'नवकोटी मारवाड़' के बिखराव से उत्पन्न राजपूताना कभी भी विदेशी शासकों के सम्पूर्ण आधिपत्य में नहीं रहा और केवल सामयिक सन्धियां हुई। इस क्षेत्र के लोगों का दुर्दमनीय स्वातंत्र-प्रेम मारवाड़ी को हमेशा विरासत में मिला।

राजपूताना के शासकों की लड़ाइयां, राणा प्रताप के विचलित होने पर उनके तेज को पुनः जागृत करना, शिवाजी को औरंगजेब की जेल से पलायन करवाना एवं अन्य एक से एक हैरतअंगेज कर्त्तव्यों के उदाहरण भरे पड़े हैं।

उत्तर भारत में १९वीं शताब्दी तक मारवाड़ियों के वैभवशाली कारोबार फैले हुए थे, व्यापारिक संबंध घनिष्ठ थे और ईमानदारी के कारण बहुत बड़ी साख भी। १८वीं शताब्दी में मुर्शिदाबाद के 'जगत सेठ' की उपाधि से विभूषित सेठ घराने ने शायद सर्वप्रथम 'हुंडी' का प्रचलन प्रारंभ किया था जब उनकी मुर्शिदाबाद में लिखे कागज पर दिल्ली में बादशाह के खजाने को रुपये मिल गये थे। जैसे-जैसे कलकत्ता देश की आर्थिक राजधानी के रूप में उभरता गया, इस समाज के लोग यहां बसते गये और विदेशियों से उद्योग व्यापार में टक्कर लेने लगे।

२०वीं शताब्दी के तीन अंगों का हम जरा सा विश्लेषण करें तो समाज के कृतित्व व स्वातंत्रता प्रेम का दृश्य कितना क्या रहा, वह उभर कर दृष्टिगत होता जायेगा। बंग भंग के विरुद्ध आन्दोलन के सहभागी इस समाज ने केवल बंगाल में नहीं देश के विभिन्न भागों में अपनी क्षमता व शक्ति के अनुपात में हर प्रकार का सहयोग क्रांतिकारियों को देने में कोई कसर नहीं रखी। सन् १९१४ का रोडा काण्ड, जिसका विवरण समाज विकास में प्रकाशित हुआ था, उसका ज्वलंत उदाहरण था।

महात्मा गांधी के विदेशी शासन के विरुद्ध मुक्ति संग्राम करने वालों में मारवाड़ी समाज के युवक-युवतियां पीछे नहीं रहे। सन् १९१८-१९ में गांधीजी के कलकत्ता आगमन का प्रधान प्रबन्ध इस समाज के युवकों का था। सन् १९३० के आसपास विदेशी वस्त्रों के विरुद्ध प्रदर्शन करने वाली और जेल जाने वाली प्रथम महिला स्व. इन्दुमती गोयनका थी, यद्यपि बंगाली महिलाओं ने भी आन्दोलन में भाग लिया था। पटना के सेक्रेटरियट पर तिरंगा फहराते हुए संतलाल जैन पुलिस की गोली के शिकार हुए, महाराष्ट्र में बालकृष्ण शारदा को १९३१ में फांसी दी गई, उत्तर प्रदेश में रामकृष्ण मुसद्दी और उनकी पत्नी कई बार जेल गये और उन्हीं के यहां चन्द्रशेखर आजाद अज्ञात वास में रहे। असम में प्रहलादराय जिवराजका, भगवती प्रसाद लड़िया, मध्य भारत में सम्मेलन के भूतपूर्व दो सभापति बरारकेसरी बृजलाल बियाणी और सेठ गोविन्द दास एवं अन्य सभी प्रान्तों में एक से एक दिग्गज अग्रिम पंक्ति के नेता रहे तथा हर प्रकार का बलिदान दिया। सम्मेलन की प्लेटिनम जुबली पर सन् १९९६ में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने कहा था कि जिस प्रकार राणा प्रताप के लिए भामाशाह थे उसी प्रकार महात्मा गांधी के लिए जमुनालाल बजाज थे एवं घनश्याम दास बिड़ला गांधीजी के दूसरे भामाशाह थे तथा

बंगाल के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार यदि मारवाड़ी समाज के युवक युवतियों को अलग कर दिया जाये तो गांधी जी का ९० प्रतिशत आन्दोलन शेष हो जाये।

दूसरी बात व्यापार और उद्योग क्षेत्र संबंधी भी है जिसमें अंग्रेजों के आधिपत्य को सन् १९५० तक प्राय: समाप्त कर दिया गया था। फाटका व्यापार पर सन् १९१२ तक मारवाड़ियों का इतना प्रभुत्व हो गया था कि विदेशी कम्पनियों ने उसे बंद करने की सरकार,से अपील की। सन् १९१९ तक जूट निर्यात करने वाले ९३ प्रतिशत मारवाड़ी फर्म थे। मारवाड़ियों ने जिस तेजी से सारे उत्तर और पश्चिम भारत में कपड़ा मीलें, जूट मिलें, चीनी मीलें, कागज मीलें, कोयला खदान एवं अन्य तरह की मीलें बैठाई उनके कारण सन् १९५०-५५ तक उद्योगों में ८५ प्रतिशत इनका प्रभुत्व हो गया। लेकिन उन्होंने स्थानीय व्यवसायी या उद्योगपतियों को उनके उद्योगों से विस्थापित नहीं किया बल्कि नए-नए उद्योग धंधे और व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश किया।

तीसरा और अंतिम पक्ष है- सामाजिक सुधारों का जिसने २०वीं शताब्दी में सामाजिक मान्यताओं का पूरा का पूरा रूप बदल डाला और नई सामाजिक मान्यताओं की रचना कर डाली। वे कदम-ब-कदम कुछ निम्न रूपक के प्रधान अंग रहे।-

'वर्जित विदेश यात्रा' के विरुद्ध श्री विशुद्धानंद सरस्वती विद्यालय के शिलान्यास के समय नए एटर्नी काली प्रसाद खेतान के विलायत जाने के घोषणा पर तुमुल स्वागत हुआ और सन् १९२५ तक यह वर्जना बिल्कुल समाप्त हो गई। उपर्युक्त विद्यालय की स्थापना के लिए कुछ व्यक्तियों ने अपनी पगड़ी उतार कर रख दी थी और १९०१ में तीन लाख रुपये एकत्र होने के बाद विद्यालय की आधारशीला रखने के समय वापस पहनी थी। लड़कियों की शिक्षा के लिए महाराष्ट्र में महर्षि कर्वे आगे आये उसी प्रकार अपने समाज में पद्मविभूषण सीताराम सेकसरिया का नाम आता है। सन् १९२० में बाल-विवाह रोकने के लिए शारदा एक्ट स्वीकृत हुआ तो सैकड़ों युवककर्मियों ने कम उम्र की शादियों को बहिष्कार कर बाल-विवाह को मिटवा दिया। सन् १९२६ में बाल-विधवा जानकी देवी का विवाह नागरमल मोदी से करवाया गया जिसके कारण 'मारवाड़ी अग्रवाल सभा' के मंच से बारह व्यक्तियों को जाति वहिष्कृत किया गया, जो कभी भी पूर्ण रूप से कारगर नहीं हुआ और विधवा विवाह को सामाजिक स्वीकृति मिली। सन् १९३० में एक सुविख्यात परिवार के यहां हो रहे मृतक विरादरी भोज के समय मकान के दरवाजे पर युवक लेट गए और भीतर जाने वालों को उनकी छाती डाक कर जाना पड़ा। यह ऐसी बड़ी बात थी जिसके कारण आज मृतक बिरादरी भोज का नामो-निशान नहीं है। छोटी लड़कियों के साथ वृद्ध विवाह (जो कुछ समय बाद ही विधवा हो जाती थी) को रोकवाने के अभिनव कदम उठाये गये। तत्काल अन्य युवकों से उनकी शादी करवा दी गई। राजस्थान के नवलगढ़ में एक लड़के को लड़की के कपड़े पहनाकर वृद्ध से विवाह करवा दिया गया तो कलकत्ता में भागीरथ कानोड़िया एवं अन्य लोगों ने इसके प्रतिकार के अन्य अनेक उपाय किये। गांधीजी के प्रयत्न से हरिजनों पर अत्याचार, दूसरों का छुआ न खाना आदि अनेक कुरीतियों से आन्दोलनकारियों ने समाज को मुक्ति दिलाई।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सन् १९५० से १९८५ तक पर्दा प्रथा जैसे अमानुषिक अभिशाप, दहेज, दिखावा, स्थान-स्थान पर इर्ष्या के वशीभूत समाज पर आक्रमण आदि सामाजिक समस्याओं के लिए काफी सशक्त आन्दोलन किये एवं वधू-दहन की पीड़ा के विरुद्ध भी सशक्त आवाज उठाई। यह विशेष बात रही कि इन आन्दोलनों में कलकत्ता के दैनिक अखबार विश्वमित्र के मूलचन्द, कृष्णचंद्र अग्रवाल आदि का बहुत बड़ा सहयोग मिला। यद्यपि दहेज और वधू-दहन की समस्या शत-प्रतिशत नहीं सुलझी है तथापि पुरुषों के अपेक्षा दिनों दिन स्त्रियों की कम हो रही संख्या शायद इसका सम्पूर्ण इलाज कर डाले।

सामाजिक गति, प्रगति, विराम और विकास ऐसी प्रक्रियाएं हैं जो समय की आवश्यकता के अनुसार होती है। जिस समाज का युवक सामने की दीवारों में लिखे अक्षरों को पढ़ता रहेगा और अपने समाज को ढालता रहेगा उसकी प्रगति को कोई नहीं रोक सकेगा।

पिछले १५ वर्षों में देश और दुनिया के सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक बदलाव आया है। मात्र एक बड़ा प्रश्न उसके परिप्रेक्ष्य में आंखों के सामने हैं-

२१वीं शताब्दी का मारवाड़ी युवक २०वीं शताब्दी के तराजू की तुलना में कितना और किधर झुकेगा और इसका जवाब आपके और हमारे पास कितना और क्या है ?•

मारवाड़ी वोट बैंक के रूप में संगठित हों

✍ मोहनलाल तुलस्यान

भारतीय लोकतंत्र में 'लोक' का अर्थ समस्त जनता न होकर धर्म, जाति, उपजाति, सम्प्रदाय आदि के आधार पर बंटे या बांटे गये लोगों का समूह हो गया है जिसे बरगलाकर, उकसाकर या ललचाकर राजनेता सत्ता का खेल खेलते रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्रीय भावना के साथ समग्रता में किसी भी तथ्य को देखने की दृष्टि का सर्वथा अभाव दिख रहा है।

आजादी के बाद राजनेताओं की दृष्टि में आए इसी संकुचन के कारण क्षेत्रीयता, जातीयता, धार्मिकता और साम्प्रदायिकता की भावना को बल मिला एवं लोग आपस में बंटते चले गये। बंटे हुए लोगों का उपयोग 'वोट बैंक' के रूप में संकीर्णतावादी नेताओं ने किया।

आज 'वोट बैंक' का बड़ा महत्व है। चुनावी राजनीति के केन्द्र में वोट बैंक है या यूं कहिए कि भारतीय राजनीति वोट बैंक की राजनीति होकर रह गई है। राष्ट्रीय दल हो या क्षेत्रीय सब वोट बैंक की राजनीति के प्रभाव में हैं।

संसद या विधायिका में उसी जाति और समाज के लोगों की समस्या पर विचार होता है जो वोट बैंक का बड़ा भाग होता है। जिस जाति, सम्प्रदाय और क्षेत्र के जितने ज्यादा प्रतिनिधि होते हैं उसका उतना ही अधिक प्रभाव होता है।

अधिकारों को पाने एवं विकास परियोजनाओं में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करने का उपाय यह है कि वोट बैंक के रूप में स्वयं को संगठित किया जाए एवं अपने प्रतिनिधि को संसद एवं विधायिकाओं में चुनकर भेजा जाए।

बिना वोट बैंक के अपनी आवाज संसद या विधायिका में पहुंचाना संभव नही है। इस लिहाज से जब हम अपने मारवाड़ी समाज को देखते हैं तो पाते हैं कि दस करोड़ की आबादी वाला यह समाज समुचित प्रतिनिधित्व के अभाव में घोर उपेक्षा का शिकार है।

राजस्थान, हरियाणा और मालवा की परिधि में ही नहीं, मारवाड़ी पूरे देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं। ये जहां भी हैं वहां की अर्थव्यवस्था के विकास में इनका अहम् योगदान है। सृजन के प्रतिरूप मारवाड़ी तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद नवनिर्माण के महत उद्देश्य से सदा कर्म में जुटे रहते हैं। कर्म में निपुण रहने की प्रवृत्ति मारवाड़ियों में इतनी प्रबल रही है कि वे इससे परे कुछ देखते-सुनते ही नहीं और यही वजह है कि जायज अधिकारों से भी उन्हें वंचित रखा जाता है।

पूरे देश में ऐसे अमेकों विधानसभा और लोकसभा के क्षेत्र हैं जहां मारवाड़ी ही विजेता को निर्वाचित करते हैं, लेकिन प्रतिनिधि के रूप में क्या ये विजयी नेता मारवाड़ियों के हितों की वकालत करते हैं? क्या कभी संसद या राज्यों की विधायिका में किसी ने मारवाड़ी समाज के अधिकारों का सवाल उठाया है? क्या कोई राजनीतिक दल, चाहे वह राष्ट्रीय हो या क्षेत्रीय, किसी मारवाड़ी को सहज ही महत्वपूर्ण पदों पर अधिष्ठित करता है?

जहां तक मेरा अनुभव है इन सबका उत्तर 'नहीं' है और यह इसलिए है कि मारवाड़ियों ने अब तक अपने को वोट बैंक के रूप में संगठित नहीं किया है।

ऐसा नहीं है कि मारवाड़ी राजनीति में नहीं है या राजनीतिक दलों में उनकी पूछ नहीं है। मारवाड़ी की पूछ राजनीति में सिर्फ इस कारण से होती है कि वे धन जुटाने के सशक्त माध्यम है। राजनीति के लिए धन चाहिए और धन के लिए मारवाड़ी चाहिए- बस यही सिद्धांत राजनीतिक दलों और राजनेताओं ने बना रखा है ।

लेकिन क्या इतने भर से समग्र मारवाड़ी समाज का कल्याण संभव है?

मारवाड़ी समाज का कल्याण तो तब होगा जब संसद और विधायिकाओं में मारवाड़ी प्रतिनिधि हो और वे समाज के अधिकारों के लिए सशक्त आवाज उठाएं।

मारवाड़ी समाज के अधिकारों की बात कोई प्रतिनिधि तभी उठाएगा जब उसे यह एहसास हो कि मारवाड़ी बोट बैंक है और उनकी उपेक्षा घातक हो सकती है।

इसलिए जरूरी है कि मारवाड़ी वोट बैंक के रूप में संगठित हों। संगठित रूप से आन्दोलन करें एवं हर राजनीतिक दल और राजनेता को यह आभास करा दें कि जब तक अधिकार नहीं मिलते वोट भी नहीं मिलेंगे। निश्चित तौर पर इसका सकारात्मक परिणाम सामने आएगा। जो दल और नेता मारवाड़ियों को महज दुधारू गाय समझकर दोहन करते हैं वही उनकी एकता के सम्मुख नतमस्तक होने को बाध्य होंगे।

लेकिन पहले मारवाड़ी संगठित तो हों? मैं तो बस इतना कहना चाहता हूं कि

शौके-दीदार अगर है तो नजर पैदा कर।

सर्वप्रथम मेरे सभी सहयोगियों व समाज के हर सदस्य को विक्रम संवत २०६२ शुभ नववर्ष की मंगल कामना है

म्हारो राजस्थान

✍ **भानीराम सुरेका,** राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

३० मार्च को राजस्थान दिवस यूं तो हर साल परम्परा के तौर पर मनाया जाता रहा है। सन् १९४९ से जिस दिन रजवाड़ों की रियासत को खत्म कर राजस्थान का गठन हुआ था, लेकिन इस साल जिस तरह उस गौरवमय दिवस के अवसर पर सप्ताहव्यापी कार्यक्रमों का आयोजन पूरे देश में हुआ वह प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी था। राजस्थान की राजधानी जयपुर इन आयोजनों का केन्द्र बना था एवं स्वयं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे इसकी सफलता के लिए पूरी योजना का निर्देशन कर रही थीं। राजस्थान की पारंपरिक छटा, सौन्दर्य, कला संस्कृति, भाषा सबको समेटे यह आयोजन नई पुरानी पीढ़ी दोनों को एकरस कर रहा था।

कोलकाता में भी राजस्थान फाउन्डेशन के तत्वावधान में मनोरम ढंग से राजस्थान दिवस मनाया गया जिसमें राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल पधारी थीं, साथ में कई महत्वपूर्ण राजनेता भी थे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आमंत्रण पर महामहिम राज्यपाल सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया के निवास पर आयोजित गोष्ठी में आईं, जहां उनका भव्य सम्मान पदाधिकारियों व सदस्यों ने किया। इस अवसर पर अपने उद्‌गार में उन्होंने कहा कि ७० वर्षों से निरंतर गतिशील एवं प्रासंगिक बने रहना सम्मेलन की महान् उपलब्धि है। सम्मेलन की वैचारिक प्रतिबद्धता, सांगठनिक मनोवृत्ति व सामाजिक सरोकारों की उन्होंने खूब तारीफ की।

प्रवासी राजस्थानी होने के नाते राजस्थान से जुड़ा कोई भी आयोजन हो उसमें गहरी रूचि रखना मेरी फितरत रही है। कोलकाता में रहकर भी राजस्थान को दिल में बसाकर रखने की यह प्रवृत्ति अपने परिवार वालों द्वारा अस्पताल, मंदिर, स्कूल आदि गांव में बनवाने और समाज के कतिपय लोगों से मैंने सीखी और जाना कि मातृभूमि के प्रति प्रेम प्रदर्शन दिखावे से नहीं अन्तर से होता है। यह एक संयोग ही था कि इस बार राजस्थान दिवस के कार्यक्रमों में कहीं भी व्यक्तिगत तौर पर उपस्थित नहीं रहा, क्योंकि होली को देखते हुए मैंने और मेरे सहयोगी संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सपरिवार वृन्दावन और तत्पश्चात् राजस्थान भ्रमण का कार्यक्रम बना लिया था।

भगवान की नगरी वृन्दावन में धर्म की ज्योत मन में जगाई, बांके बिहारी रंगों की अनुपम छटा बिखेरते प्रसिद्ध होलिकोत्सव में राधा-रानी के साथ जी भर होली खेली और लट्ठमार होली देखी। रंगों से सराबोर हमारा तन मन भगवान के सान्निध्य में इतना पुलकित था कि जैसे जीवन का सारा आनंद, उमंग प्रेम उभर आया हो।

वृन्दावन से हम राजस्थान के जोधपुर पहुंचे। वही जोधपुर जिसकी वीरता की गाथाएं इतिहास के पन्नों को स्वर्णिम आभा प्रदान करती है, जिसकी सुन्दरता स्वर्गीय कल्पनाओं की याद कराती है, रमणीय और नमनीय शहर जोधपुर में हम दो दिन रहे।

जोधपुर के विख्यात उमेद पैलेस में जब हम खाना खा रहे थे तो ज्ञात हुआ कि महाराजा गजसिंहजी भी वहीं पर हैं। वे उसी दिन मुम्बई से लौटे थे। साथ ही पता चला कि उनका एकलौता पुत्र जोधपुर के युवराज शिवराज सिंह जी पिछले दिनों जैयपुर में पोलो खेलते हुए घोड़े से गिरकर जख्मी हो गये थे जिनका इलाज मुम्बई अस्पताल में चल रहा है।

स्वभावत: महाराज से मिलने की उत्सुकता हुई, इससे पहले भी सम्मेलन के आमंत्रण पर महाराज कोलकाता और फिर मुम्बई में पधारे थे, अतएव उनका स्नेह हमें उनसे मिलने को प्रेरित कर रहा था। हम उनसे मिले। युवराज के सेहत की जानकारी ली एवं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

यह यहां बताना प्रासंगिक है कि महाराज गजसिंह जी का जोधपुर की जनता में बड़ा आदर व सम्मान है। लोग अब भी उन्हें हिज हायनेस (His Highness) या बापजी कहकर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं। इस सम्मान को पाने के पीछे महाराज की जनभावना का बड़ा हाथ है। वे लोगों के सुख-दु:ख के साथी है। शादी हो या गमी, जन्म हो या कोई अन्य अनुष्ठान महाराज की सूचना में होते हैं और यदा-कदा इन आयोजनों में जाकर वे अपने लोगों की भावनाओं से अपनी भावनाओं का मेल भी कराते हैं।

महाराज का म्यूजियम, गढ़ देखने लायक है। सुविस्तृत महल की साफ-सफाई देखते ही बनती है। वीरता और त्याग की कथा कहती तस्वीरें, मनमोहक नक्काशी, पालकी, कमरों और मंडपों की साज-सज्जा सब कुछ जैसे कला की पराकाष्ठा को छूने का प्रयास लग रहा था। यही तो वह जादू है जो आज भी सैलानियों को राजस्थान की ओर बरबस ही खींच लाता है।

जोधपुर से हम रामदेवरा पोखरण गये जहां बचपन के देखे पढ़े 'धरती धौरारी' के दृश्य पुन: सजीव हो उठे। रेतीली टीलों की नजरों को फिर से देखा।

खानाबदोश गारूडिया लोहार का हाल

हमारी गाड़ी सड़क पर दौड़ रही थी तो रास्ते में कई जगह गारूडिया लोहार देखने को मिले। मैंने मेरे साथी श्री रामअवतार पोद्दार से उनसे बाते करने की इच्छा जताई। गर्मी में पसीने से लथपथ हाथ में हथौड़ा थामे वे अपनी घरवाली के साथ लोहे का कुंदन बना रहे थे। पास में एक खटिया पर कई उपकरण बेचने के लिए सजाये हुए थे, घर के कुछ सदस्य गांव की गलियों में सामान बेचने निकले हुए थे। गारूडिया का मतलब जो दो पहियेवाली काठ की गाड़ी में एक दूसरी जगह वक्त-वक्त पर गाड़ी में ही अपना घर बना लेवे। यह लोहा पीटा जाति का व्यापार आग की भट्ठी जो कि बीना जीव की खाल की धौंकनी फूंक-फूंक कर

लोहे को तपाकर चिमटा, खुरपी, कटार, भाला और कुल्हाड़ी के साथ खेती के परंपरागत उपकरण बनाते हैं। संपत्ति के नाम पर यह एक बैलगाड़ी जिसमें इनका पूरा परिवार चलता है और जरूरी सामान रखा जाता है। बेसी से बेसी दूध के लिए एक बकरी साथ में रहती है। आसमान ही इनकी छत है यही पहचान इनकी है। दर-दर घूमना और गांव-गांव की ठोकर खाने के लिए यह जाति मजबूर है। न तो इनको राजनीति से मतलब है न ही इनको वोट डालना है। सरकार की इतनी कल्याणकारी योजनाओं से ये परे हैं, क्योंकि इनका कोई स्थाई निवास घर नहीं है। बच्चों के लिए न पढ़ाई न स्वास्थ्य का ख्याल है। छोटे-छोटे समूहों में फैले इस जाति के लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं, महाराणा प्रताप इनके आदर्श हैं। अपनों के बदहाली का जीवन- जीने को विवश बताते हुए एक गारूडिया श्री मूलसिंह ने हमें बताया कि उनके बच्चों ने स्कूल नहीं देखी है और बचपन लोहा पीटने से ही आरंभ होता है। उन्होंने बताया कि वे लोग गांवों के पास में ही रहना चाहते हैं। अपनी मस्ती में जीने वाले मूल सिंह ने बताया कि वे कानून और सरकार से बेखबर है, उनके नियम-कायदे अलग हैं और जो उनकी पंचायत तय कर दे वहीं उनके लिए हुक्म है। बुनियादी सुविधाओं के अभाव के बीच इन खानाबदोशों की आवाज हमेशा अनसुनी ही रह जाती है। राजस्थान दिवस के इस महान अवसर पर सरकार को इनके बारे में भी सोचकर शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतें इन लोगों को महैया करावें।

++++++ ○○○○ ++++++

मोरिया तूं क्यूं नाचै रे

मेरो पियो बसै परदेस
मोरिया तूं क्यूं नाचै रे।
रात रात खिड़की स' झांकू
कोई नजर ना आवै
बाट जोहता आंख थाक गयी
पियो घरां नहीं आवै-
मोरिया तूं क्यूं नाचै रे।
हवा को झोको जद खिड़की न'
थोड़ो सो खुड़कावै
तन्हाई की मिठी बातां
सारी रात जगावै....
मोरियां तूं क्यूं नाचै रे।
पूर्णमासी को पूर्ण चन्द्रमा
मेरो चान्द नहीं आयो
के मेर मं दुखड़ो पड़ गयो
के कोई भरमायो
मोरिया तूं क्यूं नाचै रे।
चकवा चकवी दूर रवै
पर भोर भये मिल ज्यावै
मेरी कितनी भोर गयी
औ मौसम फीको जावै
मोरिया तूं क्यूं नाचै रे।
मेरो पियो बसै परदेस
मोरिया तूं क्यूं नाचै रे।

■ राम गोपाल सर्राफ

हे मानव

हे मानव तुम लड़ते केवल
कुछ तो मानवता भी सीखो,
दानवता का परित्याग करो
कुछ कुछ सज्जनता भी सीखो।
तुम भारत मां के हो सपूत
उसकी रक्षा करना सीखो,
स्वर भरो एकता के नव-नव
अरि से न कभी डरना सीखो।
तुम क्षमाशील बनना सीखो,
कुछ मधुर बोल कहना सीखो,
मत करो किसी से रागद्वेष
समरसता से रहना सीखो।
मानवता की लज्जा रखना
उसकी खातिर मिटना सीखो,
लड़ना ही चाह रहे हो तो
जीने के हित लड़ना सीखो।
कोयल सा कूजन और
मयूरी सा नर्तन करना सीखो,
मेघो सा मधु वर्षण करना
दीपक सा तुम जलना सीखो।
हंसना सीखो, रोना सीखो
जीना सीखो, मरना सीखो,
कंगाल बने जो घूम रहे
उनकी झोली भरना सीखो।
हे मानव तुम लड़ते केवल
कुछ तो मानवता भी सीखो,
दानवता का परित्याग करो
कुछ-कुछ सज्जनता भी सीखो।।

साम्बर या वर्तमान सरकार

'गोल्डी' की नयी नवेली बहू गयी बनाने,
'गोल्डी साम्बर' पहली बार।
नयी नवेली बहू को, सासु ने किया नहीं इन्कार।
किया नहीं इन्कार....
बड़े प्यार से पास बैठाया,
१३ किस्म के पड़ेंगे मसाले, प्रेम पूर्वक उसे समझाया,
सुन इतनी सी बात, बहू के तेवर चढ़ गये चार
बोली माँजी, मैं बना रही हूं साम्बर,
न कि वर्तमान सरकार।।

❋ डॉ. प्रमोद अग्रवाल, हल्दवानी

साथ लड़ेंगे

हर जंग जिन्दगी की, हम साथ-साथ ही लड़ेंगे।
हर एक कदम अब तो, हम साथ-साथ ही चलेंगे।
बस एक ही अपना सपना, हर कोई होगा अपना,
पाकर हम प्यार सबों का, सबसे ही प्यार करेंगे।
हर जंग जिन्दगी की, हम साथ-साथ ही लड़ेंगे।
आशाओं के दीप जलाकर, सबको खुशहाल बनाकर,
अपनापनर देकर सबको, सबमें ही जोश भरेंगे।
हर जंग जिन्दगी की, हम साथ-साथ ही लड़ेंगे।
रंगों के संग है सारे, सारे ही हमारे प्यारे,
लेकर हम साथ सभी को, सबके ही संग चलेंगे।
हर जंग जिन्दगी की, हम साथ-साथ ही लड़ेंगे।
बन्धन में बंधकर सारे, बस बन्धु-बन्धु पुकारे,
सबके ही बन्धु बनकर, हम सबके पास रहेंगे।
हर जंग जिन्दगी की, हम साथ-साथ ही लड़ेंगे।
हर एक कदम अब तो, हम साथ-साथ ही चलेंगे।

❋ संदीप जैन, वीरपुर

सेठजी और मालवीय जी

✍ पुष्करलाल केडिया, कोलकाता

एक सेठ जी थे। उन पर लक्ष्मी की बड़ी कृपा थी। वे अपार धन-सम्पत्ति के स्वामी थे और समाज में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके परिवार का हर सदस्य बड़े शान-शौकत की जिन्दगी बिताता था। परिवार के लड़के राजपुत्र लगते थे और लड़कियां राजकुमारी।

सेठजी के यहां आए दिन कोई न कोई आयोजन होता ही रहता था। हर आयोजन को भव्य बनाने के लिए भारी रकम खर्च की जाती थी। ऐसे अवसरों पर बड़े-बड़े लोग आमंत्रित किये जाते थे। उनकी खूब आवभगत होती थी। जिसे भी सेठजी का निमंत्रण मिलता, वह स्वयं को बहुत सम्मानित अनुभव करता था।

समाज के साधारण व्यक्तियों को सेठजी के सारे कामों में अहंकार की गंध आती थी। वे खुलकर सेठजी की निन्दा का साहस नहीं कर पाते थे, किन्तु आपस में कानाफूसी करते रहते थे कि सेठ फिजूलखर्ची है, झूठी शान दिखानेवाला है। सेठजी के प्रशंसक धनी वर्ग के लोग ही थे। उसमें भी उनसे ईर्ष्या करने वालों की कमी न थी।

एक बार की बात है। सेठजी ने अपने तीसरे पुत्र के विवाह के अवसर पर एक भव्य भोज का आयोजन किया। विवाह की धूमधाम तो ऐसी हुई कि जिसने देखा बस देखता ही रह गया।

विशिष्ट लोगों को निमंत्रण पत्र देने के लिए सेठ जी अपनी कीमती कार में स्वयं भागदौड़ कर रहे थे। वे महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के पास भी पहुंचे। मालवीयजी उस समय अपने कमरे में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुछ वरिष्ठ प्राध्यापकों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। सेठजी को अचानक अपने सामने देखकर, उन्होंने उठकर उनका स्वागत किया। वहां बैठे हुए लोग दूसरे कमरे में चले गए।

सेठजी ने बैठते ही निमंत्रण- पत्र मालवीय जी के सामने बढ़ा दिया। मालवीयजी ने उसे पढ़ा और बोला- यह आपकी कृपा है, जो मुझ अकिंचन के पास आप निमंत्रण पत्र देने पधारे, किन्तु क्षमा करें, मैं आपके भोज में सम्मिलित नहीं हो पाऊंगा।

सेठजी यह अप्रत्याशित उत्तर सुनकर स्तब्ध रह गये। आज तक किसी ने उनका आग्रह इस तरह नहीं ठुकराया था। उन्होंने पूछा- क्या बात है पंडित जी, मुझसे कौन सी भूल हो गई, जिससे आप रुष्ट हो गये?

मालवीय जी बोले- मैं रुष्ट नहीं, दु:खी हूं। आप दिखाने के लिए जिस तरह अपना धन पानी की तरह बहाते हैं, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। आप ऐसा क्यों करते हैं?

सेठजी ने कहा- मां लक्ष्मी ने मुझे खुले हाथ से दिया है, इसलिए दिल खोलकर खुले हाथ से खर्च करता हूं। इस बहाने मुझे आप जैसी विभूतियों को अपने घर बुलाने और आदर-सत्कार का सौभाग्य मिल जाता है। मालवीय जी ने सेठ जी का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि उन्होंने खुले हाथ का गलत अर्थ समझा है। मुक्त हस्त का अर्थ है, धन का दिल खोलकर सत्कार्यों में सदुपयोग। उन्होंने सेठजी को लक्ष्मी के पास बैठे उल्लू का अर्थ समझाते हुए बताया कि उल्लू फिजूलखर्ची के परिणामों की चेतावनी का प्रतीक है। लक्ष्मी का दुरुपयोग करने पर जहां हाथी रहते हैं, वहां उल्लू बोलने लग जाएंगे।

इतना कहकर मालवीयजी गंभीर हो गये। बोले- सेठजी क्या भोज और फिजूलखर्ची से ही यश और सम्मान मिलता है? आपकी यह धारणा गलत है। हमारा देश गरीब है। यहां हजारों लोग ऐसे हैं, जो भूखे रहकर आधा पेट खाकर दिन काट रहे हैं। यहां बड़े-बड़े भोज इन नंगे भूखे लोगों का मजाक उड़ाते हैं। उनकी पीड़ा को दूनी करते हैं। आप ही सोचिए, जब मेरे दिमाग में भूख से बिलबिलाते लोगों की तस्वीर हर समय बनी रहती है, तो आपके भोज में परोसे जाने वाले स्वादिष्ट पकवान मेरे गले के नीचे भला कैसे उतर सकते है? यदि आप इस भोज के खर्च से गरीबों को भोजन कराते, तो मैं उनकी पांत में बैठकर भरपेट खाता और संतुष्ट होता।

सेठजी ने सिर झुका लिया। कुछ क्षणों तक मौन रहने के बाद जब उन्होंने अपनी गर्दन उठाई तो उनकी आंखों में आंसू थे। वे बोले- पंडित जी, आज आपने मेरी आंखें खोल दी। मैं आपकी कही हुई बातें कभी नहीं भूलूंगा। आज से परामर्थ ही मेरे शेष जीवन का लक्ष्य होगा।

शुभ नववर्ष

संवत् २०६२ व श्री रामनवमी की मंगल कामना

प्रिय सदस्यवृन्द,

चैत्र शुक्ल १ विक्रम संवत् २०६२ ९ अप्रैल को भारत का वर्ष प्रवेश मेष लग्न में हो गया है।

यह नववर्ष आपको सपरिवार मंगलमय हो। शिव की शक्ति, मीरा की भक्ति, गणेश की सिद्धि, चाणक्य की बुद्धि, शारदा का ज्ञान, कर्ण का दान, राम की मर्यादा, भीष्म का वादा, हरिशचंद्र की सत्यता, लक्ष्मी की अनुकम्पा, कुबेर की सम्पन्नता प्राप्त हो-

यही हमारी शुभ कामना है।

अध्यक्ष
मोहनलाल तुलस्यान

महामंत्री
भानीराम सुरेका *मोबाइल : ९३३१११३३३२*

भिन्न-भिन्न मानवीय धार्मिक मान्यतायें

✍ **श्री बालकृष्ण गोयनका,** चेन्नई, उपसभापति, अ.भा.मा. सम्मेलन

हम अपने आपको हिन्दु, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, इसाई या सिक्ख कुछ भी कहें, मूलतः हम सब मनुष्य हैं, मानवता ही हमारा मुख्य धर्म है। अगर मानवता को हमने खो दिया तो सब कुछ खो दिया। धर्म याने मानव धर्म, मानव का कर्त्तव्य, धर्माचरण को ही धर्म कहते हैं। हिन्दु मुस्लिम आदि-आदि धर्म नहीं अलग-अलग सम्प्रदाय हैं। धर्म सम्प्रदाय के नाम पर, मठ- मंदिरों में पंथ और ग्रंथों में बान्ध रखा है, वह मनुष्य को अंधेरे में रखता है। उससे कोई जीवन मुक्त नहीं हो सकता। इन दिनों धर्म के नाम पर जो अमानुषिक घटनाएं घट रही हैं, वे बहुत शर्मनाक हैं, वह आसुरी हैवानियत भरी वृत्तियां हैं। केवल मात्र शरीर से ही मानव होना पर्याप्त नहीं, परम आवश्यकता है- 'मानवता'। सही सर्वोच्च, सर्वोत्तम, सर्वोपरि परम धर्म है- सबके प्रति क्षमा, दया, करुणा, मैत्री, स्नेह, सहानुभूति पावन स्वरूप। हमारा शरीर एक रथ है, इन्द्रियां उसके घोड़े, मन लगाम, बुद्धि सारथी है। अनियंत्रित इन्द्रियां मानव को पतन के गहन अन्धकार में पटक देती है।

वेद की शिक्षाओं को ही एक समय सच्चा धर्म माना गया, जो द्वापर युग के अंत तक महाभारत काल तक चला। महाभारत युद्ध की परिणति राष्ट्र को जिस प्रकार पतन के गर्त में ले गई, उससे सब भिज्ञ है। भारत के बहुत विचारक सन्त, महात्मा हुए परंतु सम्यक् धर्म ज्ञान से शून्य होने के कारण वे केवल भक्ति मार्ग ही प्रशस्त करते रहे। धर्म के नाम पर पशु बलि, मन्दिरों में देवदासी प्रथा के अन्तर्गत पण्डों द्वारा व्यभिचार व भ्रूणहत्या करना, शाक संप्रदाय द्वारा भैरवी चक्र रचाना, ज्योतिषियों द्वारा शोषण व अन्ध विश्वास फैलाना, सनातन धर्म के नाम पर पाषाण पूजा का प्रचार करना आम बात हो गई थी। १९वीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जहां वैदिक मूल्यों की दृढ़ता से स्थापना की वहां अवैदिक मतों का प्रबल रूप से खण्डन किया। परिणाम स्वरूप उन पर बार-बार प्राणघातक आक्रमण हुए। पण्डे, पुजारी, कापालिक, तांत्रिक, मठाधीश आदि उनके आजीवन प्राणों के ग्राहक ही बने रहे। कुछ बुद्धिमान नरेशों ने ही ऋषि का महत्व जाना और साथ दिया, शेष ने तो उनका विरोध ही किया।

धर्म के नाम पर योरोपियन देशों में पोप पादरियों ने सुधारकों व चिन्तकों पर जो जुल्म ढाये उनको पढ़ कर आदमी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ईसा मसीह, जिनको जीते जी विशेष महत्व नहीं मिला, लेकिन उनकी मौत एक शहीद की मौत थी। वे यहुदियों की भयंकर रूढ़ीवादिता का पुरजोर खण्डन किये, फलस्बरूप उन्हें सूली पर चढ़ा कर मारा। इतिहासकारों का कथन है कि इसा के उपदेशों, दृष्टान्तों और प्रचार शैली पर बौद्ध मत के उपदेशों दृष्टान्तों और प्रचार शैली का प्रभाव था। खोज से ज्ञात हुआ है कि पैलेस्टाइन में ईसा से एक शताब्दी पूर्व 'एसेनेख' नामक सम्प्रदाय बौद्धशाखा का ही स्वरूप था। ईसा दया, करुणा, अहिंसा, मैत्री का ही प्रचार करते थे। उन्होंने भारत में आकर कई वर्ष बौद्ध मठ में ध्यान तपस्या एवं बुद्ध वाणी का अध्ययन किया था। ईसा के बलिदान से इसाई मत ने उन्नति तो की और उनका प्रचार भी काफी बढ़ा, उनके बड़े-बड़े मठ भी बने, मठाधीश बने, यही मठाधीश पोप के नाम से विख्यात हुए, जिसे ईसा और ईश्वर का उत्तराधिकारी ठहराया गया। सम्पूर्ण शक्तियां पोप की मुट्ठी में आ गई, वह 'क्षमा पत्रों' तथा 'स्वर्ग में स्थान की सुरक्षा पत्रों' का कारोबार व्यापारियों की तरह करता था। मार्टिन लूथर ने इस आंधी को रोकने के प्रयत्न करते-करते अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह सब धर्म के नाम पर हुआ। 'इन्ककीजीशन' नाम की धार्मिक अदालत होती थी, इसमें न्याय आसन पर पादरी लोग काम करते थे। इस अदालत के फैसले की किसी प्रकार की अपील नहीं थी। जो लोग रोमन कैथोलिक धर्म को नहीं मानते थे वे अपराधी माने जाते थे। ऐसे ही मुसलमान भी धर्म के मामले में अन्ध विश्वासी होते हैं, धर्म पर यदि मुसलमान विचारक भी आक्षेप करता है तो उसके विरुद्ध मौत का फतवा जारी कर दिया जाता है, मुसलमान मजहब में 'अकल का दखल नहीं' मानते हैं। मुस्लिम बादशाहों, मुल्ला, मौलवियों, इमामों ने धर्म के नाम पर जो जुल्म ढाये- हकीकत राय का वध करना, गुरु गोविन्द सिंहजी के जीवित बच्चों को दीवार में चुनाना आदि।

अरब देश में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव तब हुआ जब समाज संकट पूर्ण परिस्थितियों में था। अरबों की नैतिक और सांस्कृतिक चेतना लुप्त-सी हो गई थी। अंधविश्वास, बहुदेवताराधना और रूढ़ियों के जाल में सारा समाज आवद्ध हो गया था। इन्द्रिय भोग जीवन का केन्द्र बन चुका था। समाज में नारी वर्ग की स्थिति शोचनीय थी। अरब की संतप्तभूमि अपने त्राणकर्त्ता की प्रतीक्षा कर रही थी। यह परित्राण उसे हजरत मुहम्मद के अवतरण एवं उनके संदेशों से मिला, जिसे इस्लाम की संज्ञा दी गई। हजरत मुहम्मद को पैगम्बर या नबी कहा जाता है। हजरत मुहम्मद के प्राप्त संदेशों का संग्रह उनकी मृत्यु के पश्चात खलीफा हजरत अबुबक्कर सिद्दीक ने कुरान शरीफ के रूप में ग्रंथित किया। 'इसलाम' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है- शान्ति में प्रवेश करना। यह धर्म बहुत सरल है जिसमें कर्मकाण्ड की जटिलता या दार्शनिक मतवादों की उलझनें नहीं है, यह दानशीलता और भाईचारे पर आधारित है।

ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह ने गौतम बुद्ध की राह पर चलते हुए अहिंसा, दया, करुणा, मैत्री का उपदेश दिया। मानवता को प्रेम तथा भातृभाव की शिक्षा देने वाले ईसा ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक अगोचर परमात्मा की प्रार्थना करने का उपदेश दिया। लोक हित के लिए भगवत संदेश का प्रचार करने वाले ईसा मसीह अपने क्रांतिकारी विचारों से असहमत लोगों के षड्यंत्र का शिकार बनकर सूली पर लटका दिये गये। फिर भी अंतिम क्षण तक शत्रुओं को क्षमा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते रहे। पूर्व में महात्मा बुद्ध ने तथा पश्चिम में महात्मा अरस्तू ने अपने सिद्धान्तों के द्वारा समस्त विश्व को प्रभावित किया। समाजिक शक्ति के नाम पर जो विश्वास जगा उससे संसार के विभिन्न भूभागों में वैचारिक क्रांति हुई।

हम भाग्यशाली है, हमें मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ (चोला) शरीर मिला है, हम उसका लाभ उठावें इस मानवदेह से ही ध्यान साधना का अभ्यास करते करते मुक्ति, मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। यह तभी सम्भव होगा जब हमारे संचित विकारों को क्षय करके

अंर्तमन शुद्ध निर्मल हो जायेगा। ध्यान तपस्या के अभ्यास से सबके प्रति मैत्री करुणा एवं मुदिता के भाव उठते हैं।

धरम न अपणो हो सके, बोल्यां ऊंचा बोल।
जो तू चावे धरम सुख, मन की गांठयां खोल।।
जागो मानव मानवी, सुणो धरम री बात।
रात बितायी मोकली, अब आयो परभात।।
भटके मिन्दर देवरा, रोवे शीष नवाये।
सांच धरम पाल्ये बिना, करसी कूण सहाय।।
ग्रन्थ पढ़या धणाधरम का, पकड़ न पायो सार।
ग्रन्थ के ही भार सूं, डूब गयो मझधार।।
विमल धरम धारण करयां, धरम सहायक होय।
देव ब्रह्म और ईस सब, आपै रक्षक होय।।
मैलो मन व्याकुल रवै, निरमल मन हरखाय।
निरमल मन ही मुक्त है, मैलो बंधतो जाय।।

++++++ ○○○ ++++++

हमारा मारवाड़ी समाज

✍ युगल किशोर चौधरी, चनपटिया (बिहार)

मारवाड़ी समाज देश का महत्वपूर्ण समाज है। जनसंख्या के हिसाब से हमारी आबादी देश की संपूर्ण आबादी का दसवां हिस्सा है। हमारा समाज देश के कोने-कोने में फैला हुआ है तथा अपने परिश्रम, ईमानदारी, मिलनसारिता, दानशीलता, कर्त्तव्य परायणता, देश-भक्ति एवं समस्त मानवता की सेवा भावना के कारण अपनी विशेष पहचान बना चुका है।

हमारा अतीत गौरवशाली रहा है तथा भारत की आजादी के संघर्ष में भी हमारी भूमिका प्रभावशाली रही है। बिड़ला जी पूज्य बापू की आर्थिक शक्ति थे तथा जमुनालाल बजाज उनके पंचम पुत्र कहलाये। हनुमान प्रसाद पोद्दार, स्वदेश बांधव तथा अनुशीलन समिति से जुड़े हुए थे। डॉ. राममनोहर लोहिया ने बयालीस की क्रांति में बहुत ही उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया था। स्वाधीनता आन्दोलन के संदर्भ में बंगाल के तत्कालीन प्रमुख अधिकारी ए.एच. गजनबी ने लिखा था कि यदि महात्मा गांधी के आजादी के आन्दोलन से मारवाड़ी व्यवसायियों को अलग कर दिया जाए तो नब्बे प्रतिशत आन्दोलन स्वत: समाप्त हो जाता है।

सादा जीवन उच्च विचार, शाकाहार, मितव्ययिता, आत्मनिर्भरता, भारतीय संस्कृति का पोषण, नैतिक मूल्यों का संवर्धन तथा राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण की भावना हमारी उज्वल विरासत रही है जिस पर हमें गर्व है। 'खाता न बही मारवाड़ी बोले सो सही' जैसी उक्ति हमारी उच्च कोटि की ईमानदारी को अभिव्यक्त करती हैं। हमारे समाज द्वारा बनवाये गये स्कूल, कालेज, अस्पताल, धर्मशालाएं, गोशालायें तथा मन्दिर इत्यादि हमारी उदारता और दानशीलता को दर्शाते हैं।

वर्तमान समय में जब हम सभी इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, हमारे समाज ने नई चुनौतियों को साहस के साथ स्वीकार किया है। हमारे समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक बुराइयां दूर हुई हैं। बाल-विवाह, विधवा-विवाह निषेध, पर्दा प्रथा, अशिक्षा तथा मृतक भोज इत्यादि बुराइयां समाप्त हो गई हैं। इन बुराइयों को दूर करने में मारवाड़ी सम्मेलन ने काफी प्रभावी भूमिका निभाई है। दहेज, आडम्बर, फिजूलखर्ची, प्रदर्शन और विलासिता आदि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ सम्मेलन हमेशा जोरदार आवाज उठाता रहा है जिससे समाज में सुखद परिणाम देखने को मिल रहे हैं। दहेज के खिलाफ वैवाहिक परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह पद्धति ने शानदार भूमिका निभाई है तथा अनेक जोड़ों के जीवन में नई आशाओं का संचार किया है। वैवाहिक परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह पद्धति को और आर्थिक जीवन्त बनाने की आवश्यकता है ताकि समाज दहेज दानव का अन्त कर अपनी नई छवि बनाने के दिशा में तेजी से आगे बढ़ सके। सम्मेलन के पदाधिकारियों और नेताओं को भी इनके माध्यम से अपने बेटे-बेटियों के विवाह सम्पन्न करने चाहिए ताकि समाज को नई प्रेरणा मिले और दहेज मुक्ति का अभियान पूरी ऊर्जा के साथ परवान चढ़ सके।

हमारे समाज ने जहां शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग, चिकित्सा, न्याय, टेक्नोलाजी, साहित्य, महिला सबलता एवं प्रशासनिक सेवा इत्यादि क्षेत्रों में प्रगति की है वहीं राजनीति में हमारी भागीदारी काफी न्यून है। लोकसभा में हमारे केवल आठ सांसद है, जिससे राजनीति के प्रति हमारी उदासीनता जाहिर होती है। आज का युग राजनीति प्रधान है और समाज को इस दिशा में भी आगे आना चाहिए।

राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करवाने के लिए भी हमें पूरी तन्मयता से लगना है क्योंकि राष्ट्रभाषा हिन्दी के बाद यह सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और इसकी उन्नति राष्ट्र की भावनात्मक एकता को मजबूती प्रदान करेगी।

हमारा संगठन पहले की अपेक्षा काफी शक्तिशाली और विस्तारित हुआ है मगर इसको और अधिक संगठित करने एवं फैलाने की जरूरत है। सम्मेलन के उनहत्तर वर्षों बाद भी अनेक प्रदेशों में हमारी प्रादेशिक शाखाओं का नहीं होना हमारी कमजोरी दर्शाता है। जहां हमारी शाखायें नहीं है वहां उनकी स्थापना होनी चाहिए क्योंकि संगठन में ही शक्ति होती है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला सम्मेलन और मारवाड़ी युवा मंच मिलकर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए भागीरथ प्रयास कर रहे हैं और समाज में नई चेतना का संचार हो रहा है। हमारा अतीत गरिमा मंडित रहा है, वर्तमान सुन्दर है और भविष्य नि:संदेह उज्ज्वल होगा। नये समाज के निर्माण के लिए हम सबों को समर्पण की भावना से निरन्तर कर्म पथ पर आगे बढ़ते रहना होगा तब जाकर समता, ममता और समरसता से युक्त समाज की रचना हो सकेगी।

महाकवि जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियां हमें आदर्श समाज की रचना के लिए प्रेरित कर रही है-

'इस पथ का उद्देश्य नहीं है, शान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा पर जिसके आगे राह नहीं।।'

समाज हमारा देवता है और हम उसके उपासक हैं। आइये हम सभी समाज सेवा का शुभ संकल्प लेकर नये समाज की रचना में जुट जायें, यही समय की पुकार है।

जय भारत, जय समाज!

बदलते समीकरणों में नेतृत्व की भूमिका

✍ डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका, वरिष्ठ अधिवक्ता, गौहाटी उच्च न्यायालय

नेतृत्व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक आवश्यक अंग है। परिवार उचित एवं दूरदर्शी नेतृत्व के अभाव में बिखर जाता है। इसी तरह देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में परिपक्व ईमानदार, सकारात्मक, दृढ़ संकल्प, शक्ति के नेतृत्व के अभाव में भ्रष्टाचार, कपट, हिंसा, अराजकता, निर्धनता का विषैला वातावरण तैयार हो जाता है। जो मानव जाति के लिए विनाश का कारण है।

मानव से परिवार, परिवार से समाज, समाज से गांव, शहर और राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र मजबूत होता है। चरित्र के धनी नेतृत्व वाले व्यक्ति, चरित्रवान, शिक्षित, स्वस्थ मानव जाति से इन नैसर्गिक गुणों का विकास करते हैं।

आज नेतृत्व की परिभाषा ही बदल चुकी है। वोटों की राजनीति, भ्रष्टाचार के मैदान में दौड़ रही है। भाई-भतीजावाद पनप रहा है। जातीय समीकरण बदल रहे हैं। धर्म, सुविधा की राजनीति के घेर में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। संयुक्त परिवार बीते दिनों की कहानी बखान करते हैं तो रिश्ते-नाते की भाषा सिर्फ धन के तराजू में ही तौली जाती है। राखी अपना महत्व खोती जा रही है। भोगवादी संस्कृति ने अश्लील और उन्मुक्त यौन वातावरण को खूब बढ़ावा दिया है, जिससे भ्रष्टाचार की खेती चारों तरफ लहलहा रही है। हर आदमी अपने जीवनमूल्यों की बोली लगा रहा है। सब बिकने को तैयार है, कारण सबसे बड़ा रुपया है। सिद्धांत जीवनमूल्य, नैतिकता, धर्माचरण आदि पाठ्य पुस्तकों की या मंच की शोभा बढ़ाने की भाषा अधिक, जीवन में प्रयोग करने की कम रह गई है।

इस बदलते वातावरण में किस प्रकार के नेतृत्व की समाज को आवश्यकता है यह एक विचारणीय विषय है। नेतृत्व की भूख बढ़ती जा रही है, जो समाज को छोटे-छोटे खेमों में बांट रही है। मारवाड़ी सम्मेलन कभी समाज का एक मात्र प्रतिनिधि हुआ करता था मगर बढ़ती आबादी एवं नेतृत्व की भूख ने महेश्वरी, जैन, तेरापंथी, ब्राह्मण, अग्रवाल, सरावगी आदि भागों में बांटकर एक से दूसरे के बीच दूरियां बढ़ाने में मदद की है। स्वजातीय संगठन में लोगों का जुड़ाव काफी घनिष्ठ होता है और धन की भी बहुलता रहती है। मगर सभी को लेकर जो सम्मेलन जैसा अनुष्ठान है, वह जन और धन दोनों से विपन्न है।

जब भी समाज पर हिंसा, आतंकवाद आदि के काले बादल मंडराते हैं तभी लोग बड़े मंच को याद करते हैं और नेतृत्व से अग्रणीय भूमिका निभाने की अपेक्षा करते हैं।

सबल, शिक्षित, जुझारू और समर्पित नेतृत्व की आवश्यकता है। बुद्धिजीवियों के पास इन कामों के लिए समय नहीं और कभी कोई सामने आता है तो उसे स्वीकृति नहीं। समाज धन के तराजू में अधिक वजन वाले व्यक्ति को ही नेतृत्व प्रदान करना चाहता है। देखा गया है कि जिन व्यक्तियों के पास वाणी की ताकत न हो, लेखनी से संबंध न हो, अनुभव का आधार न हो और समर्पण की भावना न हो उन्हें समाज का नेतृत्व प्रदान किया जाता है, जो खोखला और प्रभाव रहित होता है। चाटुकारों की कमी नहीं, जो अपने तुक्ष स्वार्थों के हित के लिए उनके आगे पीछे मंडराते हैं और महिमामंडित करते हैं।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि- 'Every body wants to win, but very few prepares to win' यह सच है कि हम सभी नेता तो बनना चाहते हैं मगर उसके लिए तैयारी नहीं करना चाहते। यह कहानी सभी क्षेत्रों में लागू है। आदर्श नेता तो तभी बना जा सकता है अगर वह परिवार में आदर्श बेटा, पिता, पति एवं भाई की भूमिका निभा सके- मगर ऐसे कोई बिरले ही होते हैं।

वर्तमान त्रुटिपूर्ण पाश्चात्य देशों से प्रभावित शिक्षा प्रणाली, दूषित सामाजिक वातावरण, विषैली राजनैतिक आवोहवा में आदर्श नेतृत्व रेगिस्तान में मरीचिका की तरह है। इस वातावरण में गर्भस्थ शिशु जन्म लेकर विषैली बेल की तरह पनपेगा जो न स्वयं शांति से जी पायेगा न जीने देगा। अपराधीकरण को महिमामंडित कर सामाजिक मान्यता परोक्ष रूप से देने का सिलसिला कभी खत्म होने वाला नहीं है। इस वातावरण में उचित, न्यायपूर्ण नेतृत्व समाज के लिए वरदान होगा जिसे हमें स्वीकृति देनी होगी।

सभी चिंतनशील व्यक्तियों को आह्वान करता हूं कि नेतृत्व की परिभाषा को बदले, अवांछित, धूर्त थोपे हुए नेतृत्व को अलविदा कहे और समाज में सकारात्मक एवं ठोस नेतृत्व का स्वागत करें।

जय समाज, जय सम्मेलन!

काम की पूजा

क्रियाशील जब होगा मानव, राह उसे मिल जायेगी।
किसी पर निर्भर क्या होना, कृति तुम्हें लुभायेगी।।
परम्परायें बहुत पुरानी, नव जागृति लानी होगी।
सद्विचार हर मन में होगा, प्रकृति तब मुस्कुरायेगी।।
हमें स्वतंत्रता हरदम प्यारी, इच्छाशक्ति बल खायेगी।
एकात्मक दृष्टिकोण बनाओ, तुम्हें सफलता मिल जायेगी।।
मन मस्तिष्क पर काबू पाना, अब इतना आसान नहीं।
तुम व्यक्तित्व निखारो अपना, जगति तुम्हें अपनायेगी।।
शुरूआत करने की देरी, लक्ष्य तुम्हें मिल जायेगा।
व्यवहारिक क्रान्ति आने दो शक्तिप्रखर हो जायेगी।।
हो महत्वपूर्ण तेरा निर्भय, तभी चाह बढ़ जायेगी।
काम की पूजा हरदम होगी, क्रियाशीलता रंग लायेगी।
आनन्द और उल्लास साथियों, हरदम जिगर में भरना है।
कार्य कुशलता आगे चलकर, हरदम राह बनायेगी।।
तुलस्यान विश्वास अटल हो, नयी जागृति कहती है।
साधन साधक अगर मिले तो, जग में जागृति आयेगी।।

❋ जगदीश प्रसाद 'तुलस्यान', मुजफ्फरपुर

प्रश्न नारी का सशक्तिकरण, कल और आज और आगे...

✍ **श्रीमती सरोज गुटगुटिया,** पटना, पूर्व अध्यक्षा, बिहार प्रा. मा. महिला सम्मेलन

नारी सशक्ति, क्षमा करें, मैं इस शीर्षक से सहमत नहीं हूं। नारी तो सशक्त थी, सशक्त है और/सदा सशक्त रहेगी। कौन कहता है कि वह कमजोर है? जिस धरती पर हम खड़े हैं- यह इमारत खड़ी है, जो अपनी कोख से अन्न, जल, धातु, रत्न देती है, जो अपने छाती पर हल चलानेवाले का पेट भरती है क्या वह कमजोर है? फिर नारी कैसे कमजोर है?

लेकिन नारी कमजोर हो जाती है। वह प्यार में कमजोर हो जाती है क्योंकि पुरुष को सर्वस्व समर्पण कर देती है। वह कमजोर हो जाती है, क्योंकि उसकी ममता को संतान का आसरा चाहिये। वह कमजोर हो जाती है, क्योंकि वह सुदीही अनुभव से जानती है कि परिवार का आन्तरिक केन्द्र बिन्दु वही है, अत: उसका अपरिचित और अतुलनीय धैर्य ही परिवार के विघटन को बचा सकता है। वह कमजोर है क्योंकि वह सहज रूप से सबको जोड़ कर रखना चाहती है और रखती है, वह कमजोर है क्योंकि पोत परमेश्वर चाहे जितने निकम्मे, आवारा और बेरोजगार हो, परिवार चलाने के दायित्व से पलायन कर जाय, पर वह सतत संघर्ष करती है। वह कमजोर है क्योंकि उसने अर्थतंत्र पर कब्जा करने का सामूहिक प्रयास नहीं किया। वह कमजोर है क्योंकि उसने सत्ता तंत्र पर कब्जा करने का कभी विचार ही नहीं किया। वह कमजोर है क्योंकि पुरुष से छली जाने पर भी उसे छोड़ नहीं पाती है। वह कमजोर है क्योंकि उसके अन्तिम निर्णय में बुद्धि के स्थान पर हृदय, स्वार्थ के स्थान पर त्याग, बल और हिंसा के स्थान पर सहिष्णुता और दया, क्षुद्रता के स्थान पर विशालता हावी हो जाती है।

लेकिन नारी कमजोर क्यों है? क्योंकि ईश्वर प्रकृति ने उसकी संरचना भी ऐसी की है। प्रकृति ने इस संसार में सृष्टि का दायित्व उसे ही सौंपा है, पालनहार ने अपना लघु रूप उसे ही बनाया है। उसने पुरुष को कभी इस योग्य समझा ही नहीं। अत: प्रकृति और परमात्मा द्वारा दिये गये इस दायित्व को निभाने की वचनबद्धता से वह कमजोर है। संसार में प्रकृति और वैज्ञानिकों ने अनेक अजूबे आविष्कार किये हैं दिल, गुर्दा और न जाने क्या क्या। वह शरीर में इन्हें बदल देते हैं, लगा देते हैं लेकिन अभी तक किसी पुरुष में गर्भ स्थापित नहीं कर पाये, कभी कर भी नहीं पायेंगे। ऐसी नारी कमजोर कैसे हो सकती है? प्रकृति ने उसे विविधता दी है, 'मृदुता और सौम्यता' के साथ-साथ शारीरिक रूप से मजबूत संरचना। लेकिन नारी कमजोर है, पुरुष के बल-छल के कौशल से, अर्थ प्रधान हो गये इस युग में अर्थतंत्र तक पहुंच और पकड़ न होने से, सत्ता के व्यामोह से उदासीन रहने के कारण, सत्ता तंत्र को भेद न पाने के कारण। पुरुषों के वर्चस्व वाले इस समाज ने सदियों से नारी की प्राथमिकतायें घर की चहारदीवारी में केन्द्रित कर दी, जो इन अलिखित नियमों का उल्लंघन करने का प्रयास करती है उसको सारा पुरुष समाज लगभग एक मत होकर हतोत्साहित करता है, लांछन लगाता है और कभी-कभी उसको घर की सत्ता से बेदखल करने का निंदनीय प्रयास भी करता है।

मैं विशेष रूप से अपनी युवा बहनों से कहना चाहती हूं कि आप अपनी प्राथमिकतायें स्वयं निर्धारित करें। यह प्राथमिकताएं समाज में मान्य प्राथमिकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का प्राचीन वाक्य आज तभी सार्थक है जब आप अपने को युगानुरूप मान्यताओं के अनुरूप बदल लें। बदलाव का एकमात्र माध्यम शिक्षा है। शिक्षा का अर्थ बी.ए. या एम.ए. कर लेना नहीं है, शिक्षा का अर्थ है ऐसा ज्ञान जो आपको आर्थिकऔर सत्ता के तंत्र पर पकड़ बनाने में मददगार हो अर्थात् जिससे कमाने के अवसर उपलब्ध हो और जिससे नारी समाज की स्थिति में व्यापक और स्थायी सुधार के लिए निर्णय लेने वाले तंत्र में महत्वपूर्ण और निर्णायक रूप से उपस्थित हो।

मैं अपनी हम उम्र बुजुर्ग बहनों से यह जोर देकर कहना चाहती हूं कि वे अपनी बेटियों को आत्म निर्भर बनाने वाली शिक्षा देने के प्रति दहेज से ज्यादा आग्रह रखें। आपको भी अपनी सोच बदलनी होगी तभी समाज में, नारी समाज में बदलाव आयेगा। आपकी तो कट गयी या कट रही है पर जिन्हें काटनी है कृपया उनके भविष्य को संवारे सुधारें। आप देख रखी हैं कि आपके उस पीड़ित महिलाओं केमर्मस्पर्शी उदाहरण उपलब्ध है। दहेज का आडम्बर अपनी पुत्री के सुख की मंगल कामना में बढ़ा लिया गया पर पुरुषों ने उससे अधिक अपनी मांग बढ़ा ली। आपकी नाज और प्यार से पली बिटिया के प्रति वे कितने क्रूर और हिंसक हो जाते हैं? अब दहेज से ही काम नहीं चलने वाला है, जब तक पुरुष समाज को यह मुकम्मल एहसास नहीं हो जाता है कि आवश्यकता और संकट में नारी स्वयं खड़ी हो सकती है, सन्तान को पाल सकती है अन्याय और अत्याचार को मजबूत प्रतिकार कर सकती है, तब तक उनके सोच में बुनियादी बदलाव नहीं आवेगा।

यह प्रसन्नता का विषय है कि भारत का संविधान स्त्री और पुरुष में किसी प्रकार का भेद नहीं है, उनको प्राप्त होने वाली शिक्षा और रोजगार के अवसरों में समानता की बात करता है। अत: देश के कानूनों की जननी संविधान आपके साथ है। हाल ही में मानवाधिकार के प्रति जागरूक कानूनी सतर्कता भी आपके साथ है। केवल आपको सचेत होने की जरूरत है, आपके अपने अधिकारों को और बेहतर ढंग से जानने की जरूरत है और उन अधिकारों को पाने और बनाये रखने के लिए सतत् संघर्षरत रहने की जरूरत है। संघर्ष के लिए समूह के बल का अवलंबन चाहिए। इसीलिए मारवाड़ी सम्मेलन का मंच आपका स्वर है। यह आपका अपना है, आपकी आवाज है, आपकी अभिव्यक्ति है, आपके अधिकार और अस्मिता का रक्षक है, आपका हथियार है पर इसे पुष्ट और इस्तेमाल आपको करना है। आपको अपनी या किसी दु:खी बहिन की आवाज तो पहुंचानी होगी फिर उस आवाज को समानुरूप मंगल ध्वनि या रणभेरी में बदलने का दायित्व संगठन के पदाधिकारियों का है।

अन्त में एक बात आपसे और पूरे समाज से कहना चाहती हूं कि स्त्री अपने संतान की प्राथमिक शिक्षिका है। शिक्षिका का महत्व क्या होता है, यह पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अत्यंत सुन्दर रागों में बताया है। यह हम पर लागू भी होता है-

'वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तान्तरण करती है, प्रावधिक कुशलता बनाये रखती है और सभ्यता के दीप को अलौकिक रखती है। वह केवल व्यक्ति का मार्ग नहीं दिखाती बल्कि सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करती है।'

बस जरूरत है स्वामी विवेकानंद के इस मंत्र को स्मरण रखने की कि 'उठिये, जागिये और लक्ष्य की प्राप्ति में तत्परता से लग जाइये।' ●

बिजूका

✍ डॉ. गुलाबचंद कोटड़िया, चेन्नई

बिजूका पश्चिम राजस्थान के मेरे खेत में पुरखों के समय से अपने विचार में निमग्न खड़ा था। उसकी सार सम्भाल दो तीन वर्षों में एकाध बार ही ली जाती। यीशू मसीह की तरह उसके हाथों में कील तो नहीं ठुकी थी पर दोनों हाथ लकड़ी के डंडे से बंधे थे जिस पर पुराना कुर्त्ता पहने रहने के कारण व शरीर में घास भर देने तथा चेहरे की जगह उल्टी हांडी रख उस पर आंख, नाक, कोयला से बना देने से उसका रूप अत्यंत विकृत हो गया था। पाजामे में घास व दो लक्ड़ी पर बंधा था। वीतराग भाव से वह खड़ा रहा था। उसने कभी अपने मालिक से शिकायत नहीं की। वह जीव जिनावर जन्तुओं पशु पक्षियों को हड़काता भी नहीं था। अगर कोई रात्रि में उसके रूप को देख कर डर जाए तो उसका इलाज तो उसके पास भी नहीं था। कई बार ऐसा हुआ भी है कि चोर घुस आए और बिजूका को देख भ्रमित होकर भाग खड़े हुए थे।

मैं बचपन से उसे देखता आ रहा था। दादाजी जीवित थे तब वे मुझे उसकी तरफ इशारा देख हंसाया करते थे देख अड़बों खड़ा है। प्रारंभिक दिनों में तो मैं भी भय खाता था। धीरे-धीरे मेरा डर कम हो गया था। पिताजी के साथ आता था तब तक बेखौफ होकर अभ्यस्त हो चुका था। पास के पेड़ पर मचान पर बैठकर गोफन के पत्थर फेंक चिड़ियाओं को उड़ा दिया करता था। बचपन का यह शगल मैं आज भी नहीं भूला हूं। कभी-कभी मन में सोचता क्या चिड़ियाएं बिजूका से डर कर उड़ जाती है फिर मन ही मन हंसता कि बिजूका तो निर्जीव है वह बेचारा किसी को कैसे डराएगा, धमकाएगा या हड़काएगा। चिड़िया कागले तो कभी-कभी उसके सिर पर बैठे बींट कर देते तब उसे बहुत बुरा लगता होगा फिर भी हर हालत में वह मौन धारण किए खड़ा रहता। मैंने अपना पूरा बचपन गांव में बिताया वहीं उच्च माध्यमिक विद्यालय तक पढ़ा तब तक रोज ढाणी जो खेत के बीच में थी आता जाता रहता था। ढाणी स्कूल से मात्र एक मील दूर थी। बिजूका से मेरे दोस्ताना संबंध सदा बने रहे। मैं कभी-कभी उसे सहला भी दिया करता था। घास निकल जाने पर वह भी कुर्त्ते पाजामे में भर देता तब मैं खुश होता कि बिजूका मेरा मित्र है और वह भी अवश्य मेरे स्नेह से प्लावित होता होगा। बचपन की कुछ भावनाएं ऐसी होती है जिन्हें हम ता उम्र भूल नहीं पाते। शायद उस समय मेरा सोचना मुझे कभी बुरा नहीं लगा। बिजूका के मन की बात मैं महसूस करता ही था।

आगे की पढ़ाई के लिए मुझे जोधपुर जाना पड़ गया तो मेरे और बिजूका के संबंध में व्यवधान पड़ गया। छुट्टियों में जब भी गांव आता तो बिजूका से भेंट करता ही था। मन में उसके हालचाल पूछता यह सोच प्रसन्न होता कि बिजूका भी राजी खुशी है। एक बार बड़े भैया ने कह दिया था कि हटाओ इस मनहूस बिजूका को जिसे देख कर ही डर लगता है पर मैंने विरोध किया था। बेचारे ने किसका क्या बिगाड़ा है। पिताजी ने मेरे पक्ष में राय दी तब बिजूका वहीं खड़ा रहा। राजस्थान में कुदृष्टि से बचाने के लिए भी उसे खड़ा रखा जाता है। कभी-कभी सपने में भी वह मुझे दिख जाता तो यह शिकायत करता कि क्यों मुझे इस भर गर्मी शीत ताप अंधड़ों के थपेड़ों में मार खाने के लिए खड़ा कर रखा है जब मैं हंस कर कह देता ठीक है कम्बल चादर ओढ़ा देंगे या छतरी लगा देते हैं वह खुश हो जाता और कहता-लाडीसर। एक तुम ही तो हो जो मेरे हित चिंतक हो बाकी सबके लिए तो मैं अजूबा नकली पुतला मात्र हूं। सबके लिए मैं घृणा का पात्र हूं। भगवान तुम्हें लम्बी उम्र दे और मेरी उम्र भी तुम्हारे जीवन से जोड़ द।

मैंने हंसकर पूछा था- 'क्या तुम्हारे जितनी उम्र?

'हां, शतायु हो आशीर्वाद तो यही दिया जाता है और वही शुभकामना मैंने प्रेषित की है।'

मैं चुप हो जाता। बिजूका से मेरे संवाद चलते रहते। कालेज समाप्त होते ही मैं इंडियन पुलिस सर्विस में चुन लिया गया और मेरी नियुक्ति दूर दक्षिण तमिलनाडु में हो गई तब गांव आने जाने का सिलसिला थम सा गया। भाई लोग भी गांव से पलायन कर चुके थे। रोजी रोटी के चक्कर में सभी तितर-बितर हो गए थे, क्योंकि गांव में न खेती में फायदा था न रोजगार मुहैया होता। यों भी पश्चिम राजस्थान अधिकांशत: अकालग्रस्त ही रहता है। ऐसी जगह में कोई कितने दिन रह सकता था। गांव के गांव खाली हो गए थे। मेरा परिवार मात्र ही इसका एकला उदाहरण नहीं था।

कितने ही वर्ष बीत गए। मेरा तबादला होता रहता। पुलिस की नौकरी। कई वर्षों तक गांव जाना नहीं होता। ढाणी सूनसान हो चुकी थी। मैं अपने कार्यकाल में व्यस्त रहने के कारण बिजूका को प्राय: भूल चुका था क्योंकि मेरे बीबी बच्चे घर संसार बस गया था। बच्चे भी बड़े हो गए थे। वे भी बड़े-बड़े शहरों में पले बढ़े लिखे पढ़े और ऊंची-ऊंची नौकरियां भी उनकी वहीं लग गई थी। अब तो पोते-पोतियों से घर भर गया था। मैं भी सेवानिवृत्त हो चुका हूं। आज मेरी उम्र ६५ से ऊपर है तो घर में अकेलापन महसूस करने लगा हूं। कुछ महीनों पहले रामजी की प्यारी हो गई थी। छोटा बेटा के जोधपुर में नौकरी के कारण मैं भी वहीं रहने लगा था। बड़ा बेटा तबादलों के कारण पूरे भारत के चक्कर लगाता रहता था व परिवार से सदा दूर ही रहता। जोधपुर में मैंने मकान खड़ा कर लिया था जो मेरे नाम था। छोटे बेटे की नौकरी भी अच्छी थी। वेतन भी भारी-भरकम था। मैंने संस्कार भी अच्छे

डाले सो आज्ञाकारी भी था व इज्जत भी करता था। मेरी पेंशन भी तगड़ी थी घर में कोई अभाव नहीं था, सिवा बहू के स्वभाव से जो सदा चढ़ी रहती। वह भी सरकारी आफिस में कार्यरत थी व अच्छा कमा लेती थी सो अधिक पंच-पंचायती या पारिवारिक समस्यायों में सिर खपाती ही नहीं थी। पोते-पोतियों नौकर-नौकरानियों के भरोसे थे। मैं सेवा निवृत्ति के बाद जब जोधपुर आ गया तो थोड़ी जिम्मेवारी मुझ पर भी आ गई। घर का वातावरण कुछ ऐसा था कि मन नहीं लगता तब यह अहसास मुझे होने लगा कि मात्र रुपये पैसे से सुख नहीं मिलता। सेवाभावी पुत्र बहू व बच्चों का होना जरूरी होता है। उसका अभाव मुझे खटकने लगा। किसी के पास मेरे लिए समय नहीं था, सब अपने कार्यों में व्यस्त। पोते पोतियां स्कूल चले जाते। मैं अकेला घर में बैठा बैठा ऊब जाता। तब बाहर खिड़ी के पास बैठकर नजारा देखा करता था, हाल में सोफे पर बैठ टीवी देखा करता। समय काटना भी एक समस्या बन गई थी। कुछ घूमता पर कितना घूम सकता था। बाजार भी चला जाता। साग सब्जी भी ले आता कुछ तो समय आराम से कट ही जाता था।

एक दिन अचानक सपनें में बिजूका के दर्शन हो गए। मैं तो उसे भूल ही चुका था। उसकी छवि चेते से उतर गई थी। कितने तो वर्ष बीत चुके थे। गांव के खेत तो कभी के बिक चुके थे। उन पैसों से ही शहर में घर बना लिया था। बिजूका को देखते ही मैंने पूछा- 'तुम ! इतने वर्षों के बाद ?'

'हां! तुम तो मुझे भूल गए न? मेरे मित्र हो कभी याद भी नहीं किया।'

'मैंने अपने कान पकड़े- 'हां ! भई इस गृहस्थी के चक्कर में तुम्हें तो भूल ही गया था।'

'ऐसा ही होता है, ऐसा ही होता है भाई! सब समय का फेर है।'

'क्या तुम अभी भी उसी जगह खड़े हो जहां हम तुम्हें छोड़ आए थे ?'

'अरे नहीं भाई। खेत के खरीददार ने मुझे मनहूस कहकर तभी मेरे शारीरिक अंगों को तोड़ मरोड़ बटोर कर एक तरफ फेंक दिया था। मुझे तो सांत्वना ही मिली थी चलो गर्मी सर्दी हवा से तो छुटकारा मिला पर मैं तुम्हें कभी नहीं भूल पाया सो याद आते ही आज चला आया।'

'हां! बचपन की बातें बिसरनी नहीं चाहिए।'

'पर तुमने तो बिसार दी थी न?'

'हां! उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं, तुम मुझे जो चाहे सजा दे सकते हो।'

'मैं तो क्या सजा दूंगा। प्रकृति ही तुम्हें बिजूका बना देगी।'

'यानी?'

'मेरा प्रतिरूप बनने योग्य अब तुम ही बन चुके हो।'

'पर मैं तो जीवित व्यक्ति हूं तुम्हारी तरह निर्जीव थोड़े ही हूं ?'

'तो तुम समझते थे बिजूका निर्जीव होते है।'

'और नहीं तो क्या ?'

'यह तुम्हारी सबसे बड़ी भूल है। तुम आसपास के घरों व मोहल्ले में नजर दौड़ाओ। वृद्धावस्था प्राप्त बूढ़ों की कतार लगी है और उन्हें ध्यान से देखो। जीवित अवस्था में भी वे जो अकेलापन भुगत रहे हैं अपने परिवार से जुड़े होने पर भी बिना चाहत के पात्र बने हुए है उनकी आंखों में गौर से झांको। वे मुझ जैसे बिजूका से क्या कम हैं? तुम तो समृद्ध बिजूका हो क्योंकि भारी पेंशन मिलती है बैंक बैलेंस भी है अत: बेटे बहू तुम्हें अपने साथ रखते हैं, नहीं तो तुम भी उन गरीब बिजूकाओं की तरह मारे मारे बेआसरा भटकते फिरते। तुम जब बहुत देर खिड़की की तरफ खड़े होकर देखते हो तो मेरी तरह ही लगते हो।

मुझे अब अहसास हुआ कि बिजूका सही कह रहा है। उसकी बात में तत्व है जिसे मुझे स्वीकार कर लेना चाहिए। चलते-फिरते बिजूकाओं की तादाद बढ़ चुकी है जो घोर निराशा में डूबे भटक रहे हैं फिर भी अहंकार ने मेरी बात का पलड़ा भारी रखना चाहा। मैंने कहा- 'हाथ पैर चलते हैं वे बिजूका नहीं हो सकते।'

'ठीक है स्वयं अनुभव कर लेना' - कह वह अन्तर्धान हो गया।

अब शारीरिक अवस्था बिगड़ चुकी है। कई बीमारियों ने शरीर में घर कर लिया है। चारपाई पर बेसहारा पड़ा रहता हूं। आने जाने वालों को देखता रहता हूं। कोई मुझे पुकारता नहीं। सब अपने में व्यस्त है। पुत्र, वहू, पोते-पोतियां भी मुझसे आजिज हो चुके हैं। पोता नौकरी पर बाहर चला गया। पोती का विवाह हो गया। बेटे बहू भी बूढ़े हो चुके हैं अब तो उन्हें भी सेवा की जरूरत पड़ने लगी है तो वे मेरी सेवा कहां करते। हम तीनों नौकरों के भरोसे दिन गुजार रहे हैं। जीवन में बचे दिन क्योंकि श्वांस चालू है।

एक रात फिर बिजूका सपने में प्रगट हुआ पूछा- 'कैसे हो?'

मैंने कहा- 'शायद तुमने उस समय ठीक ही कहा था अब मैंने तुम्हारा हूबहू रूप धारण कर लिया है।'

'तुम मानव कल्पना की ऊंची उड़ान भरते हो। अपने को विश्वकर्मा के समकक्ष मानते हो। तुम मुझे अस्तित्व में लाए तब तुम लोगों को यह भान नहीं रहा होगा कि स्वयं एक दिन बिजूका बनकर रह जाओगे।

मैं क्या बोलता- 'तुम्हारा कथन सही है इसमें दो राय नहीं हो सकती। अब मैं बिजूका बनकर रह गया हूं।'

'हूं'।

मैं विनोदप्रियता दरसाते बोला- 'फिर भी तुममें और मुझ में थोड़ा फर्क है।'

'क्या?'

'तुम सारी उम्र खड़े रहे मैं चारपाई पर लेटा हूं।'

बिजूका हंस पड़ा- 'सो तो है। तुम मेरे मित्र रहे हो, जीवनदान भी दिया था। वह तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता पर शुभकामनाएं तो प्रेषित कर ही सकता हूं। अच्छा मित्र अब आज्ञा दो अब मैं कभी नहीं आऊंगा अलविदा।'

'अलविदा मेरे दोस्त।'●

आपका व्यक्तित्व आपका अस्तित्व

✍ अनिता अग्रवाल

आज के इस आधुनिक और स्पर्धा भरे युग में हर कोई अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति में गुणों का समावेश अवश्य होता है जरूरत होती उसके विकास की और इस कार्य को अंजाम देता है आपका सुदृढ़ और निखरा व्यक्तित्व। व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ होता है- व्यक्ति + तत्व। तत्व से तात्पर्य है अच्छे गुणों का समावेश।

अच्छे गुण हैं- सौम्यता, सरलता, सहिष्णुता, दया, क्षमा, सौहार्द इत्यादि। यूं तो व्यक्तित्व अंग्रेजी के PERSONALITY का हिन्दी रूपान्तर है, जो इटालियन भाषा के PERSONAL शब्द का विस्तृत रूप है। PERSONAL का अर्थ है- मुखौटा। यहां मुखौटे से तात्पर्य है कि दुनिया एक रंगमंच है और जिंदगी एक अभिनय। मनुष्य उस अभिनय का एक पात्र है। एक अच्छा और सफल अभिनेता वही होता है जो अपनी भूमिका जीवंत रूप से अदा करता है।

जिसका किरदार सार्थक होगा, उसका व्यक्तित्व भी उतना ही निखरा होगा। व्यक्तित्व की सार्थकता की सबसे बड़ी कुंजी है- आत्मविश्वास। हमेशा यह महसूस करो कि तुम दुनिया के सबसे अहम् और अनमोल व्यक्ति हो। हमेशा आशावादी बनना व्यक्तित्व की सफलता का दूसरा सोपान है।

यदि इतिहास के पृष्ठों का पलटा जाय तो पता चलता है कि जितनी भी महान हस्तियां हुई हैं उन्होंने अपनी सकारात्मक सोच के कारण ही सफलता और ख्याति की बुलंदियों को चूमा है। दैवी सम्पदा के गुणों को अपने में आत्मसात करके मनुष्य एक सफल व्यक्तित्व का स्वामी बन सकता है।

कुछ लोग अच्छे चेहरे-मोहरे और सलीके से सजधज कर रहने को अच्छा व्यक्तित्व मानते हैं और इसे भाग्य की देन मानते हैं। मगर यह तो साफ अपने अवगुणों को छिपाने का एक बहाना मात्र है। भाग्य तो कर्म का दास है।

कर्म रूपी फुटबॉल पर जिसकी पकड़ जितनी मजबूत होगी, जिंदगी रूपी किक भी उतनी ही तेज लगेगी। नेपोलियन बोनापार्ट एक बार कहीं जा रहे थे। एक जगह काफी भीड़ देखकर रुके तो पता चला कि एक ज्योतिषी सबकी भाग्यरेखा परख रहा था। जिज्ञासावश नेपोलियन ने भी अपनी हथेली उनके सामने कर दी। ज्योतिषी ने उनका हाथ देखकर बताया कि उनके हाथ में तो भाग्य रेखा है ही नहीं। इस पर नेपोलियन ने चाकू निकाला और अपने हाथ पर एक लम्बी रेखा चीरकर कहा- ''यह है मेरी भाग्य-रेखा।'' तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। अगर यूं कहा जाय कि कर्म व्यक्तित्व का एक और पहलू है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में हमेशा सम रहना अच्छे व्यक्तित्व का प्रमाण है। अच्छे व्यक्तित्व वाले मनुष्य जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी घबराते नहीं हैं। उनका मुख मण्डल आत्मविश्वास और प्रसन्नता के तेज से दमकता रहता है। व्यक्तित्व का सबसे बड़ा दोष है- अहंकार। यह मन और व्यक्तित्व का सूतक है। चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण का सूतक तो कुछ घण्टों में शुद्ध हो जाता है, मगर अहंकार रूपी ग्रहण का सूतक मनुष्य को पतन की चरम सीमा पर लाकर पटक देता है जिससे मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसलिए यदि...

बनाना चाहते हो अपना अस्तित्व।
तो निर्माण करो, एक सुदृढ़ व्यक्तित्व।।

संगठन ही शक्ति है

✍ रतनलाल राठी, हैदराबाद

मारवाड़ी समाज एक गौरवमय नाम, जिसकी समृद्धि, संस्कृति रही है। जिसका मूलस्थान मारवाड़ है, लेकिन व्यवहार में जिसने समग्र राष्ट्र को अपना समझा उसकी सामाजिक, आर्थिक विकास को नई गति दी। आज तो मारवाड़ी शब्द औद्योगिक, साहस, चातुर्य, दूरदर्शिता, कठिन परिश्रम का पर्याय बन गया है। राष्ट्र का कौन सा ऐसा भाग है जहां पर इस समाज की छाप न पड़ी हो। राष्ट्र के विकास का प्रश्न हो या जन कल्याण का हर कहीं इस समाज की नम्र प्रयास की कीर्ति पताका फहरा रही है। छोटी-छोटी गद्दियों एवम् दुकानों से प्रारम्भ की गई इनकी यात्रा आज वातानुकूलित कार्यालयों तक पहुंच गई है। इस यात्रा में कई पड़ाव व उतार-चढ़ाव रहे जिनका अपना अलग इतिहास है।

राष्ट्र के निजी क्षेत्र में ४० प्रतिशत से अधिक योगदान देने वाला मारवाड़ी समाज अपने सेवा भाव के लिए प्रारम्भ से ही विनम्र प्रयास करता रहा है। तभी तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि 'मैं इस बात से अवगत हूं कि यह समाज कमाना भी जानता है तो उदारता से दान करना भी देश के प्रत्येक भाग में बिना किसी भेदभाव के जनकल्याण केन्द्रों का निर्माण कराया चाहे सरस्वती आराधना के मन्दिर हो या पूजा स्थल, कला साहित्य केन्द्र हो या चिकित्सा केन्द्र सभी इस समाज की उदार वृत्तियों के परिचायक हैं। आजादी के विभिन्न आन्दोलनों के आर्थिक सम्बल प्रारम्भ से ही प्रवासी मारवाड़ी रहे हैं जिन्होंने बापूजी एवम् अन्य नेताओं के इशारे पर अपनी थैलियों के मुंह खोल दिए।

हमारे समाज ने जमनालाल बजाज जैसा राष्ट्र समर्पित नेता श्री लाला लाजपत राय, श्री बृजलाल बियाणी, श्री कृष्णदास जाजू, श्री ईश्वरदास जालान, श्री भंवरमल सिंघी, श्री रामगोपाल माहेश्वरी, श्री नागरमल पेडीवाल आदि नेता दिए हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। चाहे राज्य सरकार हो या केन्द्र अथवा समाज का अन्य वर्ग इसका क्या कारण है? इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा इसके लिए हमें संगठित होना होगा। एक सूत्र में बंधना होगा तभी हम कुछ कर सकेंगे। बिना संगठन के हम अपने को आगे नहीं बढ़ा सकते यही मेरी सभी मारवाड़ी भाइयों से विनीत प्रार्थना है कि संगठित हों।

आज समाज में कार्यकर्त्ताओं का नितान्त अभाव है या जो कार्यकर्त्ता है उनका समाज में पर्याप्त परिचय नहीं है या फिर हम योग्य कार्यकर्त्ताओं का यथोचित समादर करना नहीं जानते। सम्भवत: वर्तमान समय में तीनों ही बातें रही हों। समाज की प्रवाहमानगति के साथ कार्यकर्त्ताओं का प्रवाह भी हमेशा चलता बढ़ता रहना चाहिए क्योंकि जहां पर प्रवाह और गति नहीं है वहां पर जड़ता आ जाती है। यदि समाज में कार्यकर्त्ता नहीं होंगे तो समाज निर्माण और विकास का क्रम निरन्तर अग्रसर नहीं हो पाएगा। सेवा, सुधार, संगठन की हमारी योजनाओं में अग्रगति नहीं आयेगी।

आज समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए कार्यकर्त्ताओं को पहचाने, उनका निर्माण करें, उन्हें स्नेह और समादर दें। साधनों का योगदान भी। क्योंकि संगठन कार्यकर्त्ताओं से ही सुदृढ़ होता है। साधारण जनमानस को संगठन से जोड़ना होगा। नये कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा, प्रोत्साहन, समादर, उत्तरदायित्व देकर उनका विश्वास और उत्साह बढ़ाना होगा तभी संगठन सुदृढ़ और गतिशील बन सकेगा।

++++++ ○○○○ ++++++

एक नया विश्वास

जिन्दगी की दौड़ में आगे निकलना है हमें
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।

हम दुराचारी नहीं, सद्भाव भरते हैं सदा,
एक नया विश्वास का आदर हम करते सदा।
वक्त के हर मोड़ को, पहचानते हैं हम सभी,
एक समर्पित भाव हम, भरते हैं अपने राष्ट्र में।
स्वार्थी संसार से डरना नहीं है अब हमें,
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।

हम प्रकृति के पुजारी, पथ नया सृजन करें,
अपनी भारत भूमि को मिलकर के हरदम नमन करें।
लेकर हाथों में तिरंगा विश्व में भ्रमण करें,
एक अधूरी चाहना को, आओ हम पूरी करें।
स्वर्ग अपने देश का मिलकर बनाना है हमें,
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।

हर खेत में हरियाली और, हर हाथों में काम हो,
हम प्रगति पथ पर चले हैं, होठों पर मुस्कान हो।
सत्य की परछाईयों पर आंच न कोई आएगी
इस नए भारत की 'तुलस्यान' शक्ति और बढ़ जाएगी।
एक नया इतिहास अपने हाथों से लिखना है हमें,
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।

- जगदीश प्रसाद तुलस्यान

एक चौथाई विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद जयपुर

प्रदेश में आने वाले लगभग एक चौथाई विदेशी पर्यटकों की पहली प्राथमिकता जयपुर है। उदयपुर दूसरे नंबर पर है। पिछले साल प्रदेश में आने वाले करीब पौने दस लाख विदेशी पर्यटकों में दो लाख से अधिक ने गुलाबी नगरी के दर्शनीय स्थलों को देखा। इससे कुछ कम उदयपुर के सुरम्य स्थलों की ओर आकर्षित हुए। इसके बाद सूर्य नगर जोधपुर के पत्थर पर्यटकों को लुभाते हैं, जहां बीते वर्ष एक लाख पर्यटक पहुंचे। पारंपरिक लोकरंगों की संस्कृति बिखेरने वाली स्वर्ण नगरी जैसलमेर की ओर ८१ हजार से अधिक सैलानियों ने रुख किया।

सरिस्का और रणथंभी देखने आने वाले पर्यटकों की संख्या बीते वर्ष क्रमश: ३४ हजार और १७ हजार थी।

क्या आप सफल होना चाहते हैं 'प्यार करें - संगठन और नेतृत्व से'

✍ डा. सुशील पोद्दार

एक दूरदर्शन के पत्रकार ने एक संस्था के अध्यक्ष से जिन्होंने नया-नया पदभार सम्भाला था इंटरव्यू लिया। उसने बधाई देते हुए कहा- ''आज तो आप बहुत खुश होंगे- सम्मान का ताज, लोगों को आदेश देने का अधिकार और चमक-दमक की दुनिया आपके कदमों में है।''

नव निर्वाचित अध्यक्ष को बड़ा अजीब लगा परंतु उन्होंने अपने आपको संयत करते हुए कहा, ''दोस्त! किसी संगठन में 'नेतृत्व' एक आंतरिक लगाव, दूसरों की सेवा और विनम्रता का ताज होता है। यह तो 'देने की आदत' को दिल से लगाना होता है। एक अध्यक्ष के नाते मैं संगठन के आदर्शों पर चलना चाहता हूं। आप हमारी नियमित बैठकों में आएं तब शायद आप सम्मान, अधिकार और चमक-दमक जैसे जुमलों को बेहतर समझ पाएंगे।'' पत्रकार महाशय को शायद कुछ भी समझ में नहीं आया और वह बगले झांकने लगा। दोस्तों! संगठन होता है- स्वार्थ से ऊपर उठकर प्रेम भाव के साथ सेवा करने का। एक मंच और संगठन के स्तंभ होते हैं उसके सदस्यगण। जब तक अध्यक्ष अपना कार्यकाल शुरू करता है तो यह सूचित होता है कि सदस्यों ने उसमें अपना विश्वास जताया है। एक अध्यक्ष कई नेताओं का नेता होता है क्योंकि संगठन के सभी सदस्य अपने-अपने कार्य क्षेत्र के नेता होते हैं। कार्यकाल की समाप्ति के बाद अध्यक्ष पुन: एक सामान्य सदस्य ही होता है। हां यह सच है कि एक वर्ष तक संगठन के कार्य किसी अध्यक्ष के मार्गदर्शन में चलते हैं। लेकिन क्या कोई भी अध्यक्ष अपनी प्रबंधन समिति और सदस्यों के सहयोग और तालमेल के बिना लोगों की सेवा कर पाएगा? एक संगठन और अध्यक्ष की सफलता की कुंजी हमेशा उसके सदस्य ही होते हैं। एक अध्यक्ष अपने सदस्यों के लिए काम नहीं करता है बल्कि अपने सदस्यों के साथ काम करता है।

उसे अपने सभी सदस्यों के सद्गुणों, अवगुणों और ताकत को पहचानने की क्षमता होनी चाहिए। उसे खुद नेतृत्व से प्यार होना चाहिए। उसे अपने संगठन के उद्देश्यों, आदर्शों का पूर्णज्ञान होना चाहिए।

कई कड़ियों की एक शृंखला में सबसे कमजोर कड़ी को ही सबसे मजबूत कड़ी माना जाता है। नेतृत्व से प्यार का मतलब केवल कुछ अच्छे सदस्यों के साथ कार्यों को सम्पादित करना नहीं है बल्कि उन सभी सदस्यों के साथ जो भी निराशावादी होते हैं। याद रखिएगा कि एक कमजोर ईंट पूरी दीवार को गिरा सकती है। हर संगठन में सदस्यों की मूलत: ३ श्रेणियां होती हैं- निराशावादी, उदासीन और आशावादी। एक अच्छे अध्यक्ष का कम से कम इतना प्रयास अवश्य होना चाहिए कि वह निराशावादी को 'उदासीन' बनाए तथा 'उदासीनों' को 'आशावादी' बनाए। आशावादी तो वैसे भी आपके साथ हैं। निराशावादी और उदासीन सदस्यों को निरंतर कार्यक्रमों में सम्मिलित कर उत्प्रेरित करें। उनके अंदर के अंधकार को प्रकाशित करें। आप डंडा चलाकर अंधकार नहीं भगा सकते हैं। केवल एक सही स्वीच दबाइए और अंधकार ऐसे गायब जैसे वह था ही नहीं। अंधेरे में किसी परछाईं को देखकर घबराने वाले अध्यक्ष को यह आभास होना चाहिए कि परछाईं तो आसपास प्रकाश की सूचक है। संगठन यदि एक वाद्ययंत्र है तो प्रत्येक सदस्य उसकी एक महत्वपूर्ण धुन। कल्पना करें उस सरगम का जहां एक भी धुन बज रही हो।

सदस्यों को बराबर के मौके देना, प्रोत्साहन देना एवं बड़ाई करते रहना ताकत होती है उस अध्यक्ष की जो नेतृत्व से प्यार करते हैं। प्रत्येक सदस्य को मौका दें, उसे प्रोत्साहित करें, अच्छे कार्य के लिए पीठ थपथपाएं, खुले मन से विचारों का आदान-प्रदान करें और सबसे ऊपर उसकी बातों और निष्कर्षों को ध्यानपूर्वक सुनें। जैसे ''अच्छा बोलने की क्षमता'' सफलता का एक शॉर्टकट रास्ता है वैसे ही 'अच्छा सुनने की क्षमता'' की महत्ता को भी कम कर नहीं आंकना चाहिए। दूसरों के विचारों और बातों को ध्यानपूर्वक सुनना भी एक कला है।

'नेतृत्व से प्यार' करने वाले अध्यक्ष कभी भी अहम् का खेल नहीं खेलता है। उसे दूसरों के समन्दर में गोता लगाना चाहिए न कि स्वयं के स्वीमिंग पुल में। उसे 'मैं' में नहीं बल्कि 'हम' में विश्वास करना चाहिए। उसे यह मालूम होना चाहिए कि वह 'अकेला' सबको साथ नहीं ले सकता है बल्कि सब मिलकर उस अकेले को साथ लेकर चल पड़ते हैं तो सभी राहे आसान हो जाती हैं। किसी भी ओर ऊंगली उठाने से पहले यह सोचना चाहिए कि तीन ऊंगलियां स्वयं की ओर निर्देशित होती है। 'नेतृत्व से प्यार' का अर्थ आदेश नहीं प्रोत्साहन होता है। तानाशाही नहीं सामूहिक प्रयास होता है। यह एक टीम वर्क है जहां TEAM का अर्थ ओता है "TOGETHER EVERYONE ACHIEVES MORE"। दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने प्रयास से कार्य संपादित करके ही दम लेते हैं। कुछ से ज्यादा ऐसे लोग होते हैं जो चीजों के होने का इंतजार करते हैं और अधिकांश ऐसे लोग हैं जिन्हें यह पता नहीं होता कि- ''वास्तव में क्या हुआ है।'' 'नेतृत्व से प्यार' करने वाला 'कुछ' 'कुछ ज्यादा' और 'अधिकांश' सभी लोगों को साथ लेकर चलता है। 'नेतृत्व से प्यार' मतलब संगठन के सभी सदस्यों से प्यार। यही है अध्यक्ष और संगठन की सफलता का मूल मंत्र।●

मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे द्वारा प्रवासी मारवाड़ी समाज से राजस्थान के विकास में सहयोग की अपील

२५ अप्रैल। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने महानगर में राजस्थान फाउन्डेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रवासी राजस्थानियों को राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में निवेश का खुला आमंत्रण देते हुए कहा कि प्रवासी भाइयों को अपनी मातृभूमि के विकास में भी योगदान देना चाहिए। उन्होंने बहुत से क्षेत्रों जैसे चिकित्सा व स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक सुविधाओं और धरोहरों को बचाने में अपना योगदान देने की अपील करते हुए अप्रवासी राजस्थानियों को वहां भागीदारी के लिए आमंत्रित किया। राज्य में नियमित रूप से सूखे व पानी की कमी पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार जल प्रबंधन के क्षेत्र में गैर सरकारी संस्थाओं को प्रोत्साहित कर रही है। सरकारी कार्यों में नागरिक भागीदारी बढ़ाने की योजना है। जैव-तकनीकी को बढ़ावा देने के लिए शीघ्र ही अथारिटी की स्थापना की जाएगी। राजस्थान में सड़कों की दशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। राज्य में ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में भी सुधार हुआ है। अब हमें छोटे-छोटे ऊर्जा संयंत्रों की आवश्यकता है, एक बड़े संयंत्र की नहीं। श्रीमती राजे ने कहा कि विकास निजी व सार्वजनिक क्षेत्र के सहयोग से ही होगा। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राजस्थान अच्छा कर रहा है।

राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे राजस्थान फाउण्डेशन कोलकाता चेप्टर द्वारा आयोजित आपसी बातचीत कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। चेप्टर के अध्यक्ष हरिमोहन बांगड़ एवं सचिव संदीप भूतोड़िया परिलक्षित हैं।

उन्होंने इसे खुशखबरी बताते हुए कहा कि केन्द्र सरकार ने २००६ का भारतीय प्रवासी सम्मेलन राजस्थान में आयोजित करने का प्रस्ताव दिया है जिस पर राजस्थान सरकार विचार कर रही है।

श्रीमती राजे से प्रत्यक्ष वार्ता में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष सर्वश्री सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका,

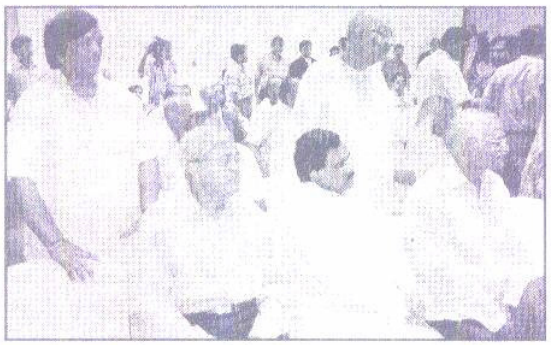

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नंदकिशोर जालान बातचीत में हिस्सा लेते हुए। कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सांवरमल भीमसरिया, सम्मेलन के उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति गोविन्द सारडा कार्यक्रम में।

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह।

संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान, पूर्व महामंत्री रतन शाह, कार्यकारिणी सदस्य हरिप्रसाद बुधिया, अरुण गुप्ता के अतिरिक्त दीपचंद नाहटा, सांवरमल भीमसरिया, प्रह्लादराय अग्रवाल, राधेश्याम अग्रवाल, महेन्द्र जालान आदि विशिष्टजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन राजस्थान फाउन्डेशन के सचिव श्री संदीप भूतोड़िया ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री हरिमोहन बांगड़ ने किया।●

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज में महिलाओं को कम न आंके : राज्यपाल प्रतिभा पाटिल

''समाज में महिलाओं की भूमिका को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। पुरुषों की तरह महिलाओं का भी समाज के निर्माण में बराबर का योगदान होता है, इसलिए महिलाओं की आत्मशक्ति, सहनशीलता, वात्सल्य व प्रेम की भावना का आदर करके उन्हें सशक्त बनाने पर जोर दिया जाए तभी समाज का सम्यक विकास सम्भव है।'' यह कहना है राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल का। वे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित कर रही थीं।

श्रीमती पाटिल ने कहा कि महिलाओं का सदा से देश और समाज के निर्माण में अप्रतीम योगदान रहा है। आजादी की लड़ाई में पुरुषों की तरह महिलाओं ने भी लाठी-गोली खाई, जेल यात्रा की, उत्पीड़न सहे लेकिन कभी हिम्मत नहीं हारीं। यूं भी दु:ख और अत्याचार झेलने के मामले में महिलाएं सबला होती हैं। हां, अत्याचार करने में वे अबला अवश्य हैं। महिलाएं जब इतना कुछ कर सकती हैं तो उन्हें अबला समझकर अलग-थलग रख देना उनके प्रति अन्याय है। उसकी सहनशीलता, करुणा, प्रेम, त्याग और वात्सल्य की भावनाओं को पहचानना होगा। घर सिर्फ पुरुषों के पैसे से नहीं चलता है बल्कि घर में रहने वाली नारी के प्रेम, सद्भावना और त्याग की भी अहम् भूमिका होती है। कुपोषण का कारण सिर्फ दरिद्रता नहीं है बल्कि अज्ञानता भी है। यदि समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ाना है तो महिलाओं को शिक्षित करना, स्वावलम्बी बनाना, उन्हें प्रेरणा देना बहुत आवश्यक है। बुद्धि के मामले में महिलायें पुरुषों से पीछे नहीं है, फर्क इतना ही है कि पुरुषों को अवसर मिला है अत: उनके बुद्धि का विकास हुआ है जबकि औरतों को अवसर नहीं दिया गया। भगवान ने सभी को बुद्धि प्रदान की है। यह हमारे समाज की देन है कि हमने उनमें पार्थकता लायी। उन्होंने कहा कि राजस्थान के अधिकांश गांवों में महिलाओं की दशा अच्छी नहीं है। उन्हें शिक्षित करने, रोजगार देने, उन्नत करने हेतु एक कम्पोजिट कॉम्प्लेक्स बनाने की योजना है।

सम्मेलन की चर्चा करते हुए श्रीमती पाटिल ने कहा कि ७० वर्षों तक इस संस्था का निरंतर गतिशील रहना इसकी प्रासंगिकता का उदाहरण है। प्रवासी राजस्थानियों को संगठित करने, उन्हें अधिकारों के प्रति जागरुक बनाने व सामाजिक बुराइयों को आत्मचिंतन-मंथन के द्वारा चिह्नित कर उनका प्रतिकार करने की पहल करके सम्मेलन ने सराहनीय कार्य किया है जिसे जारी रखने की आवश्यकता है।

माननीया राज्यपाल ने मारवाड़ी समाज की सेवा भावना की सराहना करते हुए कहा कि कमाया हुआ पैसा अपंगों, गरीबों, जरूरतमंदों को देना, स्कूल, धर्मशाला आदि का निर्माण करना मारवाड़ी समाज की बहुत बड़ी विशेषता है। समाज ने न सिर्फ राष्ट्र के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है बल्कि साथ-साथ इस समाज का शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में आर्थिक अनुदान अतुलनीय है। मारवाड़ी समाज ही एक ऐसा समाज है जो औरों का दु:ख-दर्द समझता है। अपनी मातृभूमि से विस्थापित होकर भी अपनी नींव को मारवाड़ी नहीं भूले हैं।

सम्मान समारोह में स्वागत भाषण देते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा सम्मेलन का परिचय एवं गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए।

राजस्थान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वहां विकास हो रहा है पर बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें प्रवासी राजस्थानियों को पहल करनी होगी। महिला-साक्षरता की दर पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने इसके सुधार के लिए प्रवासियों से सहयोग की अपील की।

इससे पहले सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया ने स्वागत वक्तव्य दिया व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा ने सम्मेलन को प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था बताते हुए समाज-सुधार एवं समरसता के क्षेत्र में सम्मेलन के

कार्यों की चर्चा की। श्री शर्मा ने सम्मेलन की स्थापना के पीछे नीहित उद्देश्यों को दर्शाते हुए इसे अखिल भारतीय स्तर की एकमात्र संस्था बताया जो प्रवासी मारवाड़ियों के लिए कार्य कर रही है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि आज मारवाड़ी समाज का जिस तरह जीवन के हर क्षेत्र में सम्मानजनक स्थान है उसे बरकरार रखते हुए भविष्य की पीढ़ी के कल्याण की बातें सोचनी होंगी। सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध निरंतर आन्दोलन करते रहने के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की बातों से भी समाज के हर तबके को अवगत कराना होगा जिससे प्रतियोगिता के दौर में यह समाज पिछड़ न जाए।

सम्मान गोष्ठी का अध्यक्षीय सम्बोधन करते हुए सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान।

श्री तुलस्यान ने कहा कि मारवाड़ी समाज की संख्या के हिसाब से इसका आकलन नहीं हो पा रहा है क्योंकि यह समाज राजनैतिक रूप से पिछड़ा हुआ है। उन्होंने सम्बद्ध होकर राजनैतिक क्षेत्र में पहल करने तथा राष्ट्रीय एकता का संप्रसारण करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर माननीया राज्यपाल को सम्मेलन साहित्य भेंट किया सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान ने एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया श्रीमती चम्पा देवी कानोड़िया ने। कार्यक्रम की अध्यक्षता सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान ने की एवं संचालन उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया।

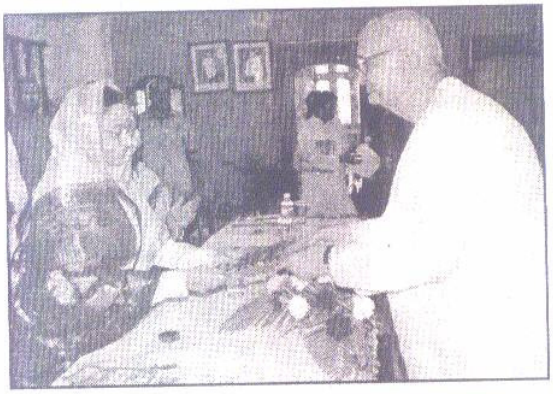

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाज विकास के सम्पादक श्री नन्दकिशोर जालान कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजस्थान की राज्यपाल महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल को सम्मेलन साहित्य भेंट करते हुए।

मंगलाचरण से कार्यक्रम का आरम्भ श्रीमती मारुति मोहता ने किया व धन्यवाद सांवरमल भीमसरिया ने दिया।

सम्मान गोष्ठी में धन्यवाद भाषण देते हुए कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सांवरमल भीमसरिया। मंचासीन हैं बाएं से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, महामहिम प्रतिभा पाटिल, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान एवं पूर्व सांसद महेश चन्द्र शर्मा।

इस मौके पर अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को स्मरणीय बनाने वालों में प्रमुख थे सर्वश्री महेश चन्द्र शर्मा, पूर्व सांसद, दीपचंद नाहटा, लोकनाथ डोकानिया, अरुण कुमार जालान, बंशीलाल बाहेती, आत्माराम सोंथलिया, जयगोविन्द इंदोरिया, रामगोपाल बागला, नवरतनमल सुराणा, महेश कुमार सहारिया, बसंत कुमार नाहटा, मोहनलाल भगत, हरिप्रसाद अग्रवाल, चंद्रप्रकाश माहेश्वरी, गौरीशंकर सिंहानिया, कैलाशपति लोहिया, बेनीगोपाल भरतिया, एम.एल. खेमानी, संतोष अग्रवाल, शांतिचंद सुखानी, बाबूलाल अग्रवाल, गौरीशंकर कायां, संत कुमार कसेरा, सुरेन्द्र कुमार तुलस्यान, शोभा कानोड़िया, बिमला कानोड़िया, मधु कानोड़िया, बाबूलाल धनानिया, नरेन्द्र गोयल, दीपक तुलस्यान, संदीप सिंघानिया, सरिता सिंघानिया, नरेन्द्र कुमार तुलस्यान, एम.एम. माहेश्वरी, आशा माहेश्वरी, बालकृष्ण माहेश्वरी, सूर्यकरण सारस्वा, अरुण गुप्ता, बी.एन. धानुका, सुभाष मुरारका, जी.एम. सिंघवी, बी.एल. कानोड़िया, पी.सी. पाटनी, अशोक पारीख, सरोज कानोड़िया, ओमप्रकाश कानोड़िया, रामअवतार कानोड़िया, गोपाल प्रसाद कानोड़िया, संजय सुरेका, अनूप सुरेका, राजेश पोद्दार आदि सम्मेलन के पदाधिकारी व सदस्यगण एवं समाज के विशिष्ट जन। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के निवास स्थान पर किया गया था।

कोलकाता : सम्मेलन द्वारा श्री घनश्याम पुरोहित का सम्मान

श्री घनश्याम पुरोहित सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा। बैठे हैं बायें से सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री सर्वश्री रामऔतार पोद्दार, घनश्याम पुरोहित, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री भानीराम सुरेका एवं पूर्व अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान।

माता-पिता को अहमियत देने वाला बच्चा ही महान होता है। परीक्षाओं में प्रथम आना कोई बड़ी बात नहीं है, संस्कार, सद्आचरण को अपनाना, उसे संजीवित रखना नि:संदेह सबसे बड़ी बात है। ये अल्फाज थे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान के जो १६ अप्रैल को मारवाड़ी सम्मेलन भवन में आयोजित **श्री घनश्याम पुरोहित सम्मान समारोह** की अध्यक्षता कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि श्री घनश्याम पुरोहित ने दिसम्बर २००४ में लंदन में आयोजित विश्वस्तरीय **द एसोसिएशन ऑफ चार्टर्ड सर्टिफाइड अकाउण्टेन्ट्स** के फाइनल परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर **स्वर्ण पदक** हासिल किया था।

श्री घनश्याम पुरोहित को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित करते सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका। मंचासीन हैं संयुक्त महामंत्री सर्वश्री राम औतार पोद्दार, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान एवं पूर्व अध्यक्ष नन्द किशोर जालान।

कोलकाता के माहेश्वरी विद्यालय के इस छात्र ने १६० देशों के तीन लाख से भी अधिक छात्रों के बीच यह विशिष्ट नतीजा हासिल किया है।

श्री तुलस्यान ने श्री पुरोहित को बधाई देते हुए कहा कि यह बड़े गौरव की बात है कि आज मारवाड़ी समाज के बच्चे बड़े-बड़े प्रतिस्पर्धामूलक परीक्षाओं में अव्वल स्थान प्राप्त करते हुए देश-विदेश की बड़ी-बड़ी कम्पनियों में ऊंचे ओहदों पर आसीन हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा श्री घनश्याम पुरोहित को मारवाड़ी पगड़ी पहनाकर सम्मानोपरान्त सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री रामौतार पोद्दार श्री पुरोहित को पुष्प माल्य से स्वागत करते हुए।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन ने शिक्षा-प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। सम्मेलन शिक्षा-कोष से मदद प्राप्त कर समाज के लड़कों ने देश-विदेश में काफी सुनाम अर्जित किए हैं। श्री शर्मा ने कहा कि सम्मेलन की विदेश शाखा लंदन में खोली गई है, अर्मेनिया में भी खोलने का विचार है और उसका दायित्व श्री पुरोहित को देना चाहेंगे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने श्री घनश्याम पुरोहित का जीवन-परिचय प्रस्तुत किया एवं ऐसे मेधावी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने वाले पुत्र को जन्म देने पर उनके माता-पिता को पूरे मारवाड़ी समाज की ओर से बधाई दी। पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान ने कहा कि आज से ५० वर्ष पूर्व किसी ने नहीं सोचा था कि समाज का बच्चा इतने दूर जाकर पढ़ेगा और उपलब्धि हासिल करेगा।

संयुक्त महामंत्री श्री रामौतार पोद्दार ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री पुरोहित की सफलता का श्रेय उनके पारिवारिक सदस्यों को

श्री घनश्याम पुरोहित को उपहार देते हुए श्री नरसिंह लाल गुप्ता।

दिया।

इसके पूर्व श्री पुरोहित ने आज के सम्मान के लिए सम्मेलन के पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए शुभकामना प्रकट की कि विश्व के १६० देशों में सम्मेलन की शाखाएं स्थापित हों।

कलकत्ता निवासी श्री शिवकुमार पुरोहित के सुपुत्र श्री घनश्याम पुरोहित फिलहाल स्टरलाइट ग्रुप ऑफ कम्पनी में अर्मेनिया (यु.एस.एस.आर.) में उच्च पद पर कार्यरत हैं।

इस सम्मानित अवसर पर सर्वश्री नरसिंहलाल गुप्ता, वेदमित्र व्यास, रामगोपाल थानवी, अशोक रांगा, प्रेम सुरेलिया सहित कई विशिष्टजन एवं श्री पुरोहित के पारिवारिक सदस्यगण उपस्थित थे।

कोलकाता : मारवाड़ी सम्मेलन भवन की द्वितीय वर्षगांठ आयोजित

१८ अप्रैल। मारवाड़ी सम्मेलन भवन का द्वितीय वर्षगांठ आज रामनवमी के दिन गणेश-लक्ष्मी एवं मर्यादा पुरुषोत्तम राम की पूजा अर्चना कर मनाया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने सम्मेलन की गतिविधियों में तीव्रता लाने एवं संगठनात्मक शक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करने की प्रार्थना की।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

डा. राम मनोहर लोहिया व्याख्यान माला समारोह

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना द्वारा २०.३.२००५ को डा. राम मनोहर लोहिया की स्मृति में व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था ''बिहार में शिक्षा की वर्तमान स्थिति, समस्या एवं निदान।''

कार्यक्रम का उद्घाटन बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने किया। अध्यक्षता श्री महेन्द्र कुमार चौधरी एवं मंच संचालन डा. आर.के. मोदी ने किया।

मुख्य वक्ता थे डॉ. आई.सी. कुमार, उपकुलपति, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा एवं मुख्य अतिथि थे डॉ. सच्चिदानंद, उपाध्यक्ष, ए.एन. सिन्हा इंस्टीच्यूट। इस अवसर पर निम्नलिखित पुरस्कार वितरण किये गये-

स्व. अर्जुन अग्रवाला पुरस्कार :- २००४ का पुरस्कार मेडिकल क्षेत्र में सात विषयों में डिस्टींगशन अंक प्राप्त डा. श्याम मोदी को एवं २००५ का पुरस्कार दुनिया की सबसे धनी समाज के व्यक्ति श्री एल.एन. मित्तल को दिया गया।

स्व. मंजू गुप्ता पुरस्कार :- शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाली महिला को २००४ का पुरस्कार श्रीमती मीरा बुधिया, रांची को एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु २००५ का श्रीमती सुशीला मोहनका को।

स्व. आनन्द बजाज पुरस्कार :- बिहार माध्यमिक परीक्षा २००३ एवं २००४ में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र प्रवीण कुमार, सीतामढ़ी एवं श्री चन्द्रकान्त प्रसाद, सुपौल को।

स्व. गायत्री देवी सुरेका पुरस्कार :- बिहार माध्यमिक परीक्षा २००३ एवं २००४ में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्रा क्रमशः सुश्री शाजिया तस्लीम, अररिया एवं सुश्री स्मिता श्रीवास्तव, बेतिया को।

स्व. प्रभूदयाल छापड़िया पुरस्कार :- बिहार माध्यमिक परीक्षा २००४ में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्र एवं छात्रा को क्रमशः श्री आलोक कुमार, बेगुसराय, सुश्री रूचि वर्मा, मुजफ्फरपुर को।

निबन्ध प्रतियोगिता :- पुरस्कार में प्रथम श्रीमती मीना, शंखपुरा, द्वितीय- सुश्री बबीता शर्मा, दरियापुर एवं तृतीय स्थान- श्री अमित कुमार मित्तल, वैशाली ने प्राप्त किया।

उद्घाटनकर्ता श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने बताया कि डॉ. राम मनोहर लोहिया एक फिजा थे। सम्पूर्ण आजादी, समता, सम्पन्नता, अन्याय के विरुद्ध जेहाद ओर समाजवाद की फिजा। मूलतः लोहिया राजनीतिक विचारक, चिंतक और स्वप्नद्रष्टा थे। राजनीतिक के साथ-साथ संस्कृति दर्शन, साहित्य, इतिहास, भाषा आदि के बारे में भी उनके मौलिक विचारक थे। महासचिव श्री प्रह्लाद राय शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

रांची : गोविन्द प्रसाद डालमिया अध्यक्ष निर्वाचित

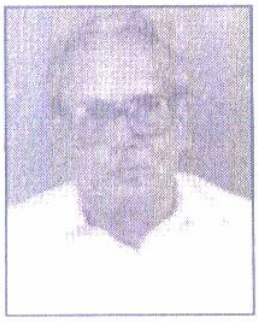

गोविन्द प्रसाद डालमिया

६ मार्च २००५ को रांची में आयोजित बैठक में श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया को झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रांतीय सभापति श्री बासुदेव बुधिया ने की।

श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया स्व. गौरीशंकर डालमिया के सुपुत्र हैं। आप १९३७ से १९५२ तक एम.एल.ए. एवं १९५२ से १९७२ तक एम.एल.सी. रहे तथा बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स, पटना, बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष, बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, पटना के चेयरमैन, फिक्की के कार्यकारिणी सदस्य व संथाल पहाड़िया सेवा मंडल, देवघर के महामंत्री भी रहे।

इनके अतिरिक्त श्री डालमिया ने अपने जीवन काल में अनेकों महत्वपूर्ण कम्पनियों, सभा, संस्थाओं को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री, प्रमुख सलाहकार आदि पदों से सुशोभित किया है जिनमें मुख्य हैं फेडरेशन आफ एसोसिएशन आफ स्माल इंडस्ट्रीज आफ इंडिया, इंडियन काउन्सिल आफ स्माल इंडस्ट्रीज, स्माल स्केल केबल एण्ड कन्डक्टर्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन आफ इंडिया, बिहार स्माल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, इंडियन एक्सपोर्ट आर्गनाइजेशन, स्माल इंडस्ट्रीज बोर्ड, आयरन एंड स्टील एडवाइजरी काउन्सिल, सेन्ट्रल एक्साइज एडवाइजरी कमिटि फार बिहार आदि-आदि।

६९ वर्षीय श्री डालमिया वर्तमान में झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन सहित झारखण्ड स्माल एण्ड टिनी इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, नार्थ झारखण्ड चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ झारखण्ड चेम्बर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्रीज के उपाध्यक्ष हैं।

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : महिला प्रकोष्ठ का गठन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, शाखा कानपुर, के महिला प्रकोष्ठ का गठन १.४.२००५ को किया गया जो निम्न हैं- अध्यक्षा श्रीमती बिन्दा भुकानिया, उपाध्यक्षा श्रीमती सुनीता तुलस्यान एवं श्रीमती प्रेमलता सर्राफ, मंत्राणी- श्रीमती रेनू भोजनगरवाला, सहमंत्राणी- श्रीमती शशि अग्रवाल, कोषाध्यक्षा- श्रीमती अलका नेवटिया, पूर्व अध्यक्षा- श्रीमती पल्लवी भरतिया। कार्यकारिणी सदस्या- श्रीमती विनीता माहेश्वरी, नीलम नेमानी, प्रेमा पारिक, मंजू सर्राफ, स्थायी विशेष आमंत्रित- श्रीमती लता रूंगटा।

गणगौर उत्सव मनाती समाज की बहनें।

नवगठित महिला प्रकोष्ठ द्वारा गणगौर उत्सव पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। गणगौर के गीतों की अन्ताक्षरी मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही। महिला प्रकोष्ठ की मंत्री श्रीमती रेनू भोजनगरवाला ने प्रतियोगिताओं का संचालन करते हुए समाज की महिलाओं से समाज सेवा के कार्यक्रमों में सहयोग का आह्वान किया। अध्यक्षा श्रीमती बिन्द भुकानिया ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि समाज की महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या

में एक मंच पर आना चाहिए। प्रकोष्ठ की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती पल्लवी भरतिया, उपाध्यक्षा श्रीमती सुनीता तुलस्यान, श्रीमती प्रेमलता सर्राफ, श्रीमती अलका नेवटिया, श्रीमती शशि अग्रवाल, श्रीमती विनीता महेश्वरी, नीलम नेमानी, मंजू सर्राफ, प्रेमा पारीक ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सराहनीय योगदान किया।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

तिनसुकिया : होली प्रीति सम्मेलन आयोजित

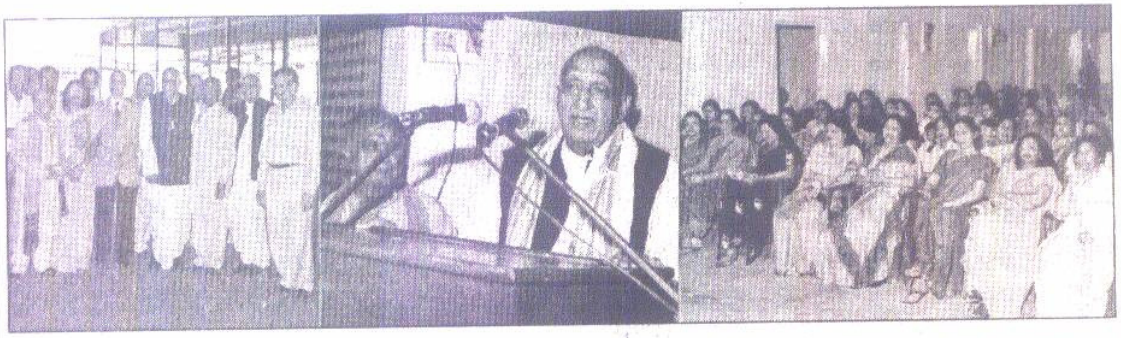

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तिनसुकिया शाखा द्वारा आयोजित होली प्रीति सम्मेलन में मुख्य अतिथि जिला सत्र न्यायाधीश जस्टिस बी.डी. अग्रवाल का स्वागत करते हुए (बायें) सम्मेलन के पदाधिकारी तथा उद्योगपति व समाजसेवी मुरारी लाल रासीवासिया (मध्य) वक्तव्य देते हुए तथा उपस्थित जन समुदाय वृन्द।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तिनसुकिया शाखा द्वारा सन् १९८९ के पश्चात् नवगठित कार्यकारिणी समिति द्वारा होली प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया। शाखाध्यक्ष श्री कुन्दनमल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित उक्त समारोह में तिनसुकिया जिला के सत्र न्यायाधीश श्री बी.डी. अग्रवाल अपनी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला देवी अग्रवाल के साथ उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के अलावा समाज के वरिष्ठ उद्योगपति सेठ श्री मुरारीलाल रासीवासिया, श्रद्धेय श्री शिवकरण खेतान मौजूद थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। मंत्री श्री सुरेश खेतान ने उद्देश्य व्याख्या करते हुए कहा कि सन् १९३५ में असम प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अभ्युदय डिब्रूगढ़ में हुआ था जिसने एक लम्बा सफर तय करते हुए समाज के सभी इकाइयों को एक मंच पर लाकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में योगदान दिया है। श्री खेतान ने बहुत जल्द तिनसुकिया में मारवाड़ी महिला समिति के पुनर्गठन की बात दोहराते हुए मातृशक्ति को अधिक जागरुक करने का आह्वान किया।

अतिथि श्री रासीवासिया ने होली की शुभ कामना देते हुए लोगों से राजनैतिक जागरण के साथ समरसता का जीवन अपनाने पर बल दिया। मुख्य अतिथि जस्टिस बासुदेव अग्रवाल ने बताया कि वैश्वीकरण की आड़ में हर १५ दिन में एक भाषा लुप्त हो रही है। उन्होंने राष्ट्रीय एवं मातृभाषा कला संस्कृति की रक्षा करने की अपील की।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में छोटे-छोटे बच्चियों द्वारा नृत्य की विभिन्न कलाएं, चंग पर होली के लोकगीतों की प्रस्तुति एवं व्यंग्य कविताओं ने लोगों को भाव विभोर किया। मंच संचालन श्री अशोक कुमार अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंत्री सर्वश्री सुरेश खेतान के साथ राजेश कुमार बिरमीवाल, राजू खेमका, दामोदर शर्मा, नन्दनलाल अग्रवाल, मायादी किल्ला, सुशीला देवी खेमका, सरिता देवी खेतान, रेणु गुप्ता, पुष्पा देवी अग्रवाल काफी सक्रिय रहीं। राजू खेमका द्वारा सम्पादित होली की उपाधियों, लोकगीतों से सजी लघु स्मारिका वितरित की गई।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

दुर्गापुर शाखा : होली प्रीति सम्मेलन आयोजित

दुर्गापुर शाखा मारवाड़ी सम्मेलन होली प्रीति सम्मेलन एवं रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जहां समाज के सभी संस्था तथा बच्चे, महिला एवं बुजुर्ग उपस्थित थे। कार्यक्रम के विशेष आमंत्रित श्री कैलाश चन्द्र मित्रा, आईपीएस, आई.जी. साउथ बंगाल (ए.पी.) को प्रतीक चिन्ह चांदी का मेडल प्रदान कर नागरिक अभिनन्दन किया गया। २० समाज के प्रतिभाशाली शिक्षित छात्रों को चांदी

का मेडल तथा सम्मान पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। महिला मंच द्वारा समाज के ही बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

कलकत्ता : कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ता. २७ मार्च को होली प्रीति सम्मेलन आयोजित किया गया था। जिसका संचालन शाखा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने किया।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

जबलपुर : परिचय पुस्तिका का विमोचन

जबलपुर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा परिचय पुस्तिका २००५ का विमोचन २४ अप्रैल २००५ को आयेजित है। साथ ही जबलपुर मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का चयन होगा क्योंकि वर्तमान पदाधिकारियों का कार्यकाल पूरा हो गया है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

कांटाबाजी और चाईवासा : राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक एवं राष्ट्रीय सभा सम्पन्न

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की सप्तम कार्यकारिणी समिति की बैठक एवं २१वीं राष्ट्रीय सभा चाईबासा शाखा एवं चाईबासा जागृति (महिला) शाखा के आतिथ्य में चाईबासा (झारखंड) में सम्पन्न हुई। बैठक का उद्घाटन एवं अध्यक्षता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष युवा बलराम सुल्तानिया ने की। राष्ट्रीय महामंत्री युवा पुरुषोत्तम शर्मा ने प्रदिवेदन प्रस्तुत किया। बैठक में पूरे भारतवर्ष के विभिन्न शाखाओं से आये प्रतिनिधियों ने नेशनल मारवाड़ी फाउन्डेशन की प्रगति, राष्ट्रीय कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, संगठन विस्तार एत्तं सक्रियता, दिल्ली में मंच भवन का निर्माण, सुनामी तूफान से प्रभावित लोगों के लिए मंच द्वारा स्थायी निर्माण, मंच द्वारा किये गये कल्याणकारी कार्यक्रमों, आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन एवं भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर उचित निर्णय लिया।

बैठक में उत्कल प्रांत के कांटाबांजी से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवा कैलाश चन्द अग्रवाल, कार्यशाला के प्रांतीय संयोजक युवा राजेश अग्रवाल 'हीरा', बरगढ़ से प्रांतीय अध्यक्ष युवा श्याम सुन्दर अग्रवाल, प्रांतीय महामंत्री युवा जयप्रकाश लाठ, रा.का. सदस्य युवा ओमप्रकाश तुलस्यान, कटक से रा.का. सदस्य युवा हेमन्त अग्रवाल, रा. संयोजक युवा अशोक शर्मा, रा. सह संयोजक युवा अनिल अग्रवाल, भुवनेश्वर से रा. सह संयोजक युवा कमल शर्मा, पटनागढ़ से मंडलीय उपाध्यक्ष युवा प्रदीप अग्रवाल। सोहेला से प्रा. कोषाध्यक्ष युवा ललित अग्रवाल तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सभा में विभिन्न क्षेत्रों से उल्लेखनीय योगदान के लिए सत्र २००३-०४ के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण किया गया। युवा कैलाश चन्द अग्रवाल को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच को सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय इकाई, बरगढ़ के युवा जयप्रकाश लाठ को सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय महामंत्री, भुवनेश्वर शाखा को सर्वोत्तम शाखा, कांटाबाजी, कांटाबांजी मिड टाउन, बरगढ़, कटक, पटना गढ़, अंगूल, बालेश्वर, बड़बिल शाखाओं को विशिष्ट शाखा, सर्वोत्तम राष्ट्रीय कार्यक्रम कृत्रिम पैर व एम्बूलेन्स सेवा के लिए कटक शाखा, अंगूल शाखा को अमृतधारा (पानी प्याऊ) का संचालन, भुवनेश्वर शाखा को सदस्यता विस्तार एवं कटक के युवा सुशील संतुका को सर्वश्रेष्ठ शाखाध्यक्ष का पुरस्कार प्रदान किया गया। मंच में उल्लेखनीय कार्य हेतु उत्कल प्रांत अग्रणी रहा। कांटाबाजी, कांटाबांजी मिड टाउन, कटक, पटनागढ़, टिटिलागढ़, सीनापाली, अंगूल, बृजराजनगर, मदनपुर रामपुर व मेलझामुन्डा शाखा को सन् २००४-०५ हेतु अग्रिम शुल्क प्रेषण हेतु सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय सभा कांटाबांजी, बरगढ़, कटक, भुवनेश्वर, पटनागढ़, सोहेला, टिटिलागढ़, सिन्नापाली, सम्बलपुर, बृजराजनगर, भटली, लोइसींगा, गुडभग्गा आदि शाखाओं के प्रतिनिधियों ने अंश ग्रहण किया। द्विदिवसीय राष्ट्र स्तरीय बैठक को कार्यक्रम संयोजक डॉ. विजय मुंधड़ा, चाईबासा शाखा के अध्यक्ष युवा रमेश खिरवाल, चाईबासा जागृति शाखा की अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल ने सफल बनाया।

पुन: कार्यकारिणी की बैठक ता: १२ मार्च को हुई। गोवा से लेकर झारखंड तक घट रहे राजनीतिक घटनाक्रमों से अछूती नहीं रही। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया ने उद्घाटन के अवसर पर पिछले दिनों हुई घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि मंच गैर राजनीतिक संगठन है, लेकिन विचारवान लोगों का संगठन होने के नाते वे चाहते हैं कि सभी राजनीतिक दलों के

लोग संविधान और न्यायपालिका का सम्मान करें। किसी के द्वारा इसे तोड़ने-मरोड़ने का प्रयास नहीं किया जाए। वर्तमान स्थिति में सभी दल अपनी सुविधा के अनुसार संविधान की व्याख्या करने में जुटे हैं जो कि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण फैसलों में दिल्ली में छात्र-छात्राओं के लिए मंच द्वारा छात्रावास का निर्माण कराना तय किया गया जो कि प्रथम चरण में ३०० लोगों के रहने के लिए होगा। अभी मंच द्वारा एक छात्रावास किराये के भवन में चलाया जा रहा है। इसके अलावा दिल्ली में मंच का एक भवन बनवाने की भी बात तय की गई।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर के आयोजन को सम्बोधित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया। बायें में बैठे हैं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महेश जी जालान दायें से प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल, चकिया शाखा सम्मेलन के कार्यकारिणी सदस्य श्री गोविन्द तुलस्यान।

बाराचकिया : चिकित्सा शिविर आयोजित एवं शिलापट का अनावरण

युवा मंच की बाराचकिया शाखा द्वारा नि:शुल्क एक्युप्रेशर सुलभ चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें २२५ रोगियों की मुफ्त चिकित्सा की गई जो विभिन्न रोगों से ग्रसित थे। शिविर में प्रांतीय सहायक मंत्री 'घ' चौधरी संजय अग्रवाल का सक्रिय योगदान रहा।

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया ने शिविर का निरीक्षण कर शाखा सदस्यों को बधाई दी। एक बैठक में श्री सुल्तानिया ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम से जन जागृति आती है। सदस्यों में सेवा की भावना उत्पन्न होती है। बैठक को सम्बोधित करने वालों में मंच के संस्थापक अध्यक्ष बिहार प्रांत के श्री महेश जालान, प्रांतीय उपाध्यक्ष अरुण पोद्दार, प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल आदि थे। आयोजन की सफलता में शाखा अध्यक्ष नवी[illegible]नी, सचिव सुशील पोद्दार, संजय मोदी, धीरज चौधरी, संजय रुंगटा, श्रवण मोदी, संदीप तुलस्यान, सुशील अग्रवाल, विमल कुमार अग्रवाल आदि विशेष सक्रिय रहे।

२६ जनवरी को चकिया शाखा द्वारा केसरिया के बुद्ध स्तूप के मुख्य द्वार पर मंच के शिलापट्ट का अनावरण किया गया। सर्वप्रथम शाखाध्यक्ष ने झंडोत्तोलन किया। तदुपरान्त शिलापट्ट के अनावरण के अवसर पर चकिया नगर पंचायत अध्यक्ष (मेयर) श्रीमती प्रभा देवी प्रांतीय उपाध्यक्ष अरुण पोद्दार, प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल वार्ड आयुक्त श्रीमती बबिता तुलस्यान मुख्य रूप से उपस्थित थे। अनावरण समारोह की अध्यक्ष शाखाध्यक्ष नवीन चनानी ने की। कार्यक्रम संयोजक शाखा सचिव सुशील पोद्दार थे।

मोतीपुर : स्थापना दिवस आयोजित

२३ जनवरी। युवा मंच की मोतीपुर शाखा द्वारा २१वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया को प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने स्मृति चिह्न एवं समाज गौरव प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। अपने सम्बोधन में श्री सुलतानिया ने शाखा कार्यकर्ताओं को नये तरीके से कार्य करने की सलाह दी एवं कहा कि प्राकृतिक आपदा काल में युवा मंच के कार्यकर्त्ता सहायता उपलब्ध कराने में सबसे आगे रहे हैं। सुनामी पीड़ितों के सहायतार्थ अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सहित मंच के कार्यकर्त्ता दर्जनों राहत शिविर चला रहे हैं। मंच वहां विस्थापितों के पुनर्वास की व्यवस्था करेगा। मंच विकलांगों के अंग प्रत्यारोपण का भी कार्य करता है अब देहाती क्षेत्रों में भी २०-२५ विकलांगों का अंग प्रत्यारोपण किया जाएगा। श्री सुलतानिया ने चौधरी संजय अग्रवाल को उनकी सक्रियता पर बधाई दी। सुमन नाथानी द्वारा मोतीपुर शाखा को एक एम्बुलेंस गाड़ी उपलब्ध कराने की मांग पर राष्ट्रीय अध्यक्ष ने राष्ट्र एवं प्रांत द्वारा शाखाओं को दी जाने वाली अनुदान राशि हेतु मोतीपुर शाखा को स्वीकृत किया। मोतीपुर से सर्वप्रथम सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण होने पर श्री संदीप सरावगी को पुरस्कृत तथा बिहार प्रांत के संस्थापक अध्यक्ष श्री महेश जालान को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता शाखाध्यक्ष रमेश कुमार अग्रवाल ने की।

समारोह को पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री महेश जालान, प्रांतीय उपाध्यक्ष अरुण पोद्दार, चौधरी संजय अग्रवाल, लोकचन्द नाथानी, मनोज अग्रवाल, मुरारी नाथानी, दिलीप मोदी, केदार मोदी, सुमन, विपुल कुमार सोनू, सुरेश जालान आदि ने सम्बोधित किया।

इस अवसर पर शाखा द्वारा संचालित आर्ट गैलरी प्रशिक्षण केन्द्र का फोटो प्रदर्शनी एवं शाखा द्वारा प्राप्त पुरस्कारों, पदकों की प्रदर्शनी लगाई गई।

जोरहाट : प्रांतीय सभा की २०वीं बैठक में गृहीत मुख्य प्रस्ताव

२६ दिसम्बर २००४। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच की २०वीं बैठक प्रांतीय अध्यक्ष श्री नवल किशोर मौर की अध्यक्षता में जोरहाट में अनुष्ठित हुई। बैठक में वर्ष २००४ के महामंत्री के प्रतिवेदन व वर्ष २००३-०४ के अंकेक्षित आय-व्यय के ब्यौरे अनुमोदन के अलावा आने वाले समय में प्रांत की गतिविधियों के निर्धारण हेतु कई प्रस्ताव व सुझाव प्रस्तुत हुए। सभा ने प्रांत तथा राष्ट्रहित की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर भी कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये। सभा में वर्ष २००३-०४ के अध्यक्षीय पुरस्कारों की घोषणा व उनका वितरण भी किया गया।

सुनामी पीड़ितों हेतु ७०९०१ रुपये के अनुदान के वचन प्राप्त हुए।

कांटाबांजी : ब्लड बैंक का भूमि पूजन

विधायक हाजी मोहम्मद आयुष खांन के सहयोग से कांटाबांजी के सरकारी चिकित्सालय में मारवाड़ी युवा मंच की कांटाबांजी शाखा द्वारा ब्लड बैंक निर्माण हेतु भूमि पूजन सम्पन्न हुआ।

भूमि पूजन के बाद जनसभा को सम्बोधित करते हुए विधायक श्री खान ने मारवाड़ी युवा मंच के सेवा भावी कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने अपने विधायक निधि से ब्लड बैंक हेतु दो लाख रुपये दिये तथा आगे भी देने का आश्वासन दिए। मंच पर नगरपाल श्रीमती सरिता आर्या, उपनगरपाल श्री कयुम खांन, बलांगीर से डॉ. होता, मेडिकल आफीसर डॉ. आर.एन. त्रिपाठी, मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री आशीष अग्रवाल व ब्लड बैंक चेयरमैन श्री अजय अग्रवाल उपस्थित थे। मंच संचालन श्री राजेश अग्रवाल 'हीरा' ने किया। अजय अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कांटाबांजी व हसनपुर रोड : २००५-०६ के अध्यक्ष व मंत्री निर्वाचित

कांटाबांजी शाखा का सत्र २००५-०६ के सांगठनिक चुनाव में सर्वसम्मति से युवा नारायण अग्रवाल को अध्यक्ष चुना गया। युवा नारायण अग्रवाल सत्र २००३-०४ में भी शाखा का नेतृत्व कर चुके हैं। युवा नारायण ने अध्यक्ष चुने जाने पर सभी को धन्यवाद देते हुए सहयोग की कामना की एवं युवा मुकेश जैन को शाखामंत्री की जिम्मेदारी दी।

युवा नारायण के अध्यक्ष चुने जाने पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवा कैलाश चन्द अग्रवाल, संस्थापक शाखामंत्री युवा कैलाश अग्रवाल, राष्ट्रीय सह-संयोजक युवा सुभाष अग्रवाल सहित अनेकों पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उन्हें बधाइयां दी।

हसनपुर रोड शाखा के श्री दीपचन्द बड़बड़िया सर्व सम्मति से सत्र २००५-०६ के नये अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

कांटाबाजी शाखा एवं कांटाबांजी मिड टाउन (महिला) शाखा द्वारा उत्कल दिवस के शुभ अवसर पर १९वां वार्षिक कार्यक्रम एवं सत्र २००५-०६ हेतु नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय अग्रसेन सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल ने नेत्र शिविर का उद्घाटन किया। साथ खड़े हैं मारवाड़ी सम्मेलन शाखा अध्यक्ष श्री परमेश्वर लाल गिन्दोरिया, मायुम के प्रांतीय स. मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल, नेत्र विशेषज्ञ डॉ. अजय जायसवाल, स. मंच शाखा अध्यक्ष रमेश अग्रवाल 'डब्बू'।

कांटाबांजी शाखाध्यक्ष श्री आशीष अग्रवाल ने समारोह की अध्यक्षता की। शाखा द्वय के मंत्री श्री आनन्द अग्रवाल एवं कुमारी आरती बंसल ने सचिव प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

मोतीपुर : नेत्र परीक्षण शिविर एवं क्रिकेट प्रतियोगिता सम्पन्न

फरवरी में मारवाड़ी युवा मंच द्वारा नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर विद्यालय के करीब ३६५ छात्र-छात्राओं के नेत्र रोग का परीक्षण किया गया। शिविर में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए श्री अग्रवाल ने आंखों के नि:शुल्क इलाज में आई हास्पीटल मुजफ्फरपुर तथा मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की।

समारोह की अध्यक्षता श्री रमेश कुमार अग्रवाल ने की। मंच संचालन प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने की। समारोह को प्रो. आरतीनाथ सिंह, परमेश्वर लाल सिबौड़िया, विनय किशोर सिंह सहित अन्य लोगों ने संबोधित किया।

रेनबो क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल मैच मुजफ्फरपुर और कांटी टीम के बीच हुआ जिसमें मुजफ्फरपुर जिला विजेता रही। मुख्य अतिथि प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने विजेता, उप-विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया।

कोलकाता : शाखा के पदाधिकारियों का चुनाव एवं शपथ ग्रहण समारोह

१७ अप्रैल। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के कोलकाता उत्तर मध्य व हावड़ा शाखा के वर्ष २००५-०६ के लिए निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। मंच के अ.भा. अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने कहा कि मारवाड़ी युवाओं को ४०५ शाखाओं के मार्फत संगठित रूप से सामाजिक क्षेत्र में आगे आना चाहिए। मंच के कार्यक्रमों में कृत्रिम अंग वितरण, शव वाहन एवं एम्बुलेंस आदि उपलब्ध कराने की कर्यों की प्रशंसा की जा रही है। इसे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाया जा सके, इस पर विशेष ध्यान दिया जाए। समारोह में मंच के प्रदेश सचिव सर्वश्री संजय अग्रवाल, श्रवण अग्रवाल ने भी वक्तव्य रखा। संचालन श्री गोपाल कलवानी ने किया।

कलकत्ता उत्तर मध्य शाखा में श्री दिलीप गोयनका को अध्यक्ष एवं विमल चौधरी को सचिव निर्वाचित किया गया। हावड़ा में श्री गोविन्द टिबड़ेवाल को अध्यक्ष एवं सुरेश हरलालका को सचिव निर्वाचित किया गया।

मारवाड़ी युवा मंच, कोलकाता शाखा, का नया गठन किया गया, जिसमें सर्वश्री सज्जन कुमार बेरीवाल को अध्यक्ष, संदीप जालान को महामंत्री एवं अनिल कुमार डालमिया को कोषाध्यक्ष चुना गया।

अन्य संस्थाएं

श्री बनवारीलाल भालोटिया, रानीगंज, जन्म शतवार्षिकी समारोह

तिलक पुस्तकालय रानीगंज के तत्वावधान में ता: १३ मार्च को दानवीर, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाप्रेमी व सामाजिक कार्यकर्ता श्री बनवारी लाल भालोटिया का उपर्युक्त समारोह काफी बड़ी सफलता के साथ लगभग १५००० लोगों की उपस्थिति में मनाया गया जिसकी सभापतित्व रानीगंज नगरपालिका के अध्यक्ष रूनू दत्ता ने की।

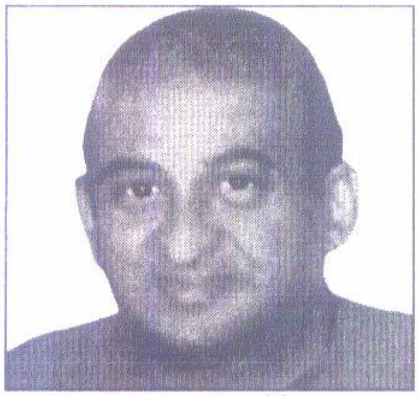

बनवारीलाल जी भालोटिया
बचपन से ही कुछ कर गुजरने की ललक
इनमें कूट-कूट कर भरी थी

विशिष्ट अतिथि के रूप में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि बनवारी बाबू राजस्थान समाज के गौरव थे। भारतवर्ष में १० करोड़ मारवाड़ी निवास करते हैं। मारवाड़ी समाज में समर्पण की भावना है। हमारे देश में आज सैकड़ों बनवारीलाल भालोटिया की जरूरत है। बनवारी बाबू ने शिक्षा के क्षेत्र में जो सुकार्य किया है यदि इन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो इस अंचल के घर-घर में आज शिक्षित व्यक्ति नहीं मिलते। हमारे समाज में आज संगठन की कमी आ गई है। हम सबों को एक होना होगा, तभी हम आगे बढ़ सकेंगे। मैं सभी मारवाड़ी समाज की ओर से बनवारी बाबू को, भालोटिया परिवार को धन्यवाद देता हूं। उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक है जो दूसरों के लिए जीए। अपने लिए तो सभी जीते हैं। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हम पहले भारतवासी हैं। मारवाड़ी समाज को आमतौर पर लोग सम्पन्न और धनवान समझते हैं किन्तु मारवाड़ी समाज में भी गरीब भरे पड़े हैं। बनवारी बाबू ने मानव सेवा का पथ हमेशा सिखाया है। हमें इनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। लगभग १५००० गणमान्य की उपस्थिति में सांसद विकास चौधरी ने भालोटियाजी की प्रतिमा का अनावरण किया और बनवारी बाबू के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि पं. बंगाल के लघु उद्योगमंत्री श्री वंशगोपाल चौधरी ने कहा कि बनवारी बाबू द्वारा स्थापित त्रिवेणी देवी भालोटिया कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करके ही मैं आज इस मुकाम तक पहुंचा हूं। श्री विनय कृष्ण चौधरी कहा करते थे, ''मनुष्य का जन्म कहीं भी हुआ हो, किसी भी जाति का हो, किन्तु उसकी पहचान उसके कार्यों से होती है। सबसे बड़ा धर्म है मानव सेवा। हमें इसी पथ को अपनाना चाहिए। मुख्य वक्ता पूर्व विधायक सुकुमार बनर्जी ने कहा कि बनवारी बाबू समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले गये हैं। वे पूरे हिन्दुस्तान के गौरव हैं। मंत्री वंशगोपाल चौधरी ने बनवारी बाबू से सम्बन्धित एक स्मारिका का विमोचन किया।

स्वागताध्यक्ष श्री गोविन्दराम खेतान ने कहा कि इस अंचल में दो कॉलेजों की स्थापना कर बनवारी बाबू ने शिक्षा जगत में बहुत बड़ा कार्य किया है। इस अवसर पर बनवारी बाबू की पुत्रवधु श्रीमती पुष्पा देवी व पौत्र श्री रवीन्द्र कुमार भालोटिया विशेष रूप से उपस्थित थे।

पुस्तकालय की परम्परा अनुसार राष्ट्रीय स्तर के कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के मुख्य परामर्शदाता सर्वश्री अरुण चौहान, सचिव राजीव झुनझुनवाला, रामगोपाल खेतान आदि के भागीरथ प्रयास से आयोजन काफी सफल रहा।

१४ वर्ष की उम्र में सन् १९१८ में सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की। १९३० में गांधीजी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह के लिए दांडी मार्च में भाग लिया, भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए अंग्रेज सरकार के हिट लिस्ट में आए और कारावास की सजा हुई, बंगलाभाषी साथियों को हिन्दी सिखाने के प्रयास किए तथा शिक्षा अभियान में दुर्गा विद्यालय स्कूल, सावित्री बालिका विद्यालय की स्थापना की। बंगला माध्यम की गांधी मेमोरियल स्कूल एक तल्ला अपनी पूजनीय मां रमादेवी के नाम से बनवाया। पिता की स्मृति में राजस्थान के सतनाली ग्राम में लक्ष्मीनारायण भालोटिया उच्च विद्यालय की स्थापना की। ये देश-सेवा के लिए ताम्रपत्र से नवाजे गए।

नन्दकुटी (हुगली जिला में सामूहिक विवाह)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सन् १९९४ में ऐसे आयोजन सफलतापूर्वक प्रारम्भ किये थे तब से देश के विभिन्न स्थानों में सभी समाजों में ऐसे आयोजन निरंतर हो रहे हैं। इंटरनेशनल लायंस क्लब जिला ३२२ बी १ द्वारा नन्दकुटि ग्राम में ७० युवक एवं युवतियों के सामूहिक विवाह का आयोजन ता: ९ फरवरी को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम का मान बढ़ाने वालों में प्रमुख थे डायरेक्टर जनरल आफ पुलिस (फायर) सर्वश्री एच.ए. साफ्वी, हुगली

जिला पुलिस अध्यक्ष एस. सरकार, पूर्व सांसद सुदीप बन्द्योपाध्याय, विधायक काली प्रसाद विश्वास, विधायिका श्रीमती नयना बन्द्योपाध्याय, अन्तर्राष्ट्रीय निदेशक लायन ए.बी. सिंह एवं लायन सी. वारा प्रसाद के अलावा पूर्व अंतर्राष्ट्रीय निदेशक एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, पूर्व अंतर्राष्ट्रीय निदेशक लायन प्रेम लाहोटी, चेम्बर ऑफ टेक्सटाइल ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री के अध्यक्ष मुरारीलाल खेतान, हरियाणा भवन के ट्रस्टी गोपीराम बड़ोपोलिया, उद्योगपति सुन्दरलाल दुगड़, प्रेस क्लब के अध्यक्ष राजू मिठोरिया, सीसीएमए के कार्यकारी अध्यक्ष रामेश्वर भट्टड़, पूर्व डी.जी.पी. देवव्रत बनर्जी, सीटी केबल के निदेशक सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, एटीएन चैनल के निदेशक संतोष जैन, राज कुमार सरावगी, महन्त महिपाल गुरु, सुविख्यात नेत्र शल्य चिकित्सक डॉ. रजनी सराफ एवं पूर्व विधायक तथा लायन्स हेस्टिंग्स ग्रामीण सेवा केन्द्र के चेयरमैन लायन राजेश खेतान।

राष्ट्रीय महामंत्री लायन भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री लायन राम औतार पोद्दार, कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष लायन ओमप्रकाश पोद्दार, लायन सांवरमल भीमसरिया, लायन सुभाष मुरारका, लायन भगत राम अग्रवाल, लायन सूरज बागला, गीतेश शर्मा कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में संलग्न थे।

कोलकाता : कुम्हारटोली सेवा समिति के शल्ययन शिविर में सांसद ने किया शववाहिनी देने का एलान

६ मार्च। कुम्हारटोली सेवा समिति की ओर से आयोजित २५वें नि:शुल्क हार्निया-हाइड्रोसील शल्ययन शिविर के उद्घाटन अवसर पर सांसद श्री सुधांशु शील ने कहा कि समिति द्वारा धारावाहिक तरीके से प्रति वर्ष शिविर लगाकर सैकड़ों गरीब लोगों को हार्निया/हाइड्रोसील से निजात दिलाने का काम काबिले तारीफ है। सांसद ने अपने संसदीय कोटे से एक शववाहिनी गाड़ी देने का एलान किया है।

समारोह का उद्घाटन करते हुए समाज सेवी श्री मामराज अग्रवाल ने समिति के कार्य पर संतोष जताया। शिविर अध्यक्ष सर्वश्री डॉ. एस.के. घोष, विधायक तारक बनर्जी, समाजसेवी रामावतार सराफ, श्यामलाल डोकानिया, विश्वम्भर नेवर ने भी अपने विचार रखे। शिविर चेयरमैन श्री रामगोपाल बागला ने शिविर की विशेषताओं से अगवत कराया। स्वागत भाषण समिति के उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल जालान ने दिया। समिति के सचिव श्री सुभाष मुरारका ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए समारोह का सफल संचालन किया। श्री मुरारका ने बताया कि शिविर में चार बच्चों सहित कुल १७३ लोगों की शल्ययन क्रिया की गई जिसमें १०३ हाइड्रोसील एवं ७० हार्निया के रोगी हैं। इस मौके पर समिति सभापति सर्वश्री बाबूलाल बुधिया ने समारोह की अध्यक्षता की।

कोलकाता : मनीषिका का अखिल भारतीय कार्यकर्त्ता चेतना शिविर

१ जनवरी। मनीषिका के तत्वावधान में दो दिवसीय अखिल भारतीय कार्यकर्ता चेतना शिविर आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने किया। इस दो दिवसीय शिविर में राजस्थान, पंजाब, कानपुर, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, दिल्ली व बंगाल के विभिन्न अंचलों से करीब सवा सौ कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया, जिसमें ५० महिलाएं भी शामिल थीं। कार्यक्रम में युवतियों की संख्या २० फीसदी थी। पहले सत्र में मनीषिका के अध्यक्ष पुष्कर लाल केडिया ने आत्मज्ञान, पंच तत्व, मनुष्य की आंतरिक शक्तियां, समय का मूल्यांकन, जीवन में सफलता के सूत्र, पारिवारिक सूत्र, शांति एवं तनाव नियंत्रण तथा सुव्यवस्थित कार्य संचालन के महत्वपूर्ण तत्वों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वाइस-चान्सलर कल्याणमल लोढ़ा ने वर्तमान समाज में गहराती जा रही अपसंस्कृति से ग्रसित मानसिकता पर चिन्ता जाहिर की। आयोजित कार्यक्रम में मनीषिका के प्रधान सचिव कृष्ण कुमार सराफ, समाज सेवी गौरीशंकर कायां और जुगलकिशोर गुप्ता, अविनाश गुप्ता, सुधीर गुप्ता, विनय पाण्डेय समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

रायपुर : प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक में समाजहित के कई निर्णय

९ जनवरी। छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल सम्मेलन ने प्रदेश के समस्त अग्रबन्धुओं को एक सूत्र में पिरोने, समस्त अग्रवाल सभाओं को संबद्धता प्रदान करने एवं वैवाहिक संबंधों को सुगमतापूर्वक तय कराने के लिए परिचय सम्मेलन कराने का निर्णय लिया गया। ये निर्णय श्री सियाराम अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक में लिए गए। बैठक में प्रदेश के मुख्य पदाधिकारियों, सदस्यों एवं सभी अग्रवाल सभाओं के प्रमुख पदाधिकारियों का परिचय निर्देशिका प्रकाशित करने तथा राज्य स्तरीय क्रीड़ा व कला प्रतियोगिता का आयोजन करने का भी निर्णय लिया गया।

नई दिल्ली : माहेश्वरी क्लब द्वारा सुनामी में सहायता

माहेश्वरी क्लब के सभापति श्री अनिल जाजू के आह्वान पर माहेश्वरी क्लब ने ५ लाख से भी ज्यादा राहत की सामग्री दक्षिण पूर्वी भारत के कुडलूर जिले को सुनामी सहायता के रूप में दी, जिसमें तिरपाल, गद्दे, बर्तन, कपड़े, चावल, दाल, स्टोव आदि थे। सदस्य श्री आलोक डागा एवं श्री जाजू ने कुडलूर जिले का दौरा भी किया। २६ जनवरी को क्लब की हेल्प लाइन की बैठक में श्री राजकुमार कर्वा की अध्यक्षता में यह फैसला लिया गया कि भविष्य में नाव एवं जाल की व्यवस्था क्लब पूरा करेगी। माहेश्वरी क्लब द्वारा कुडलूर जिले में गांव गोद लेने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए दस लाख रुपयों का कोष बनाया गया।

राजनांदगांव : डॉ. राममनोहर लोहिया की जयन्ती पर संगोष्ठी आयोजित

डा. राममनोहर लोहिया की जयंति पर संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री मूलचंद अग्रवाल एवं उपस्थित वक्ता तथा मातृशक्ति। (श्री अग्रवाल सभा, राजनांदगांव छत्तीसगढ़)

श्री अग्रवाल सभा के प्रचार मंत्री अशोक लोहिया द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार डॉ. राममनोहर लोहिया के जन्म दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी का शुभारंभ महाराजा श्री अग्रसेन एवं डॉ. लोहिया के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पमाला पहनाकर किया गया। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के उपाध्यक्ष मूलचंद अग्रवाल ने डॉ. लोहिया के जीवन पर प्रकाश डाला। समाज के पूर्व अध्यक्ष सत्यनारायण लोहिया ने ऐसे आयोजन की तारीफ की तथा भविष्य में अन्य महापुरुषों की भी जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किये जाने का आह्वान किया। गोष्ठी का संचालन अशोक लोहिया ने तथा आभार सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल ने व्यक्त किया। गोष्ठी में प्रमुख रूप से नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष सुदेश देशमुख, छबिलाल कौशिक, समाज के सचिव हरिनारायण अग्रवाल, विष्णु लोहिया, सुरेश अग्रवाल, नंदकिशोर अग्रवाल, जुगलकिशोर अग्रवाल, महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती उमा अग्रवाल, श्रीमती उमा रुंगटा, संतोष लोहिया, ओमप्रकाश अग्रवाल, शरद अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, संजय अग्रवाल सहित अनेक स्वजातीय बंधु उपस्थित थे।

जूनागढ़ : गायत्री प्राण प्रतिष्ठा एवं नवकुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

१० फरवरी २००४। जूनागढ़ के प्रसिद्ध गायत्री मंदिर के निर्माण कार्य के पश्चात् पूजनीय श्री गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा की गई एवं महाकालेश्वर, दुर्गा, लक्ष्मी व आचार्य श्रीराम शर्मा व माता भगवती देवी शर्मा की चरण पादुका स्मारक के रूप में मंदिर में प्रतिष्ठित की गई। समारोह की संध्या १५० बहनों ने कलश यात्रा में भाग लिया। ११ फरवरी को नवकुण्डीय महायज्ञ का प्रारंभ, १३ फरवरी को पूर्णाहुति हुई। पूरे यज्ञ में तीन हजार से अधिक भाई बहनों ने भाग लिया।

सम्मान / बधाई

रतन शाह को राजस्थानी साहित्य सम्मान

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर ने सम्मेलन के भूतपूर्व उपसभापति श्री रतन शाह को २००४ का ''प्रवासी राजस्थानी साहित्य सम्मान'' देने का निर्णय लिया है, जो अकादमी के वार्षिक समारोह में प्रदान किया जाएगा। श्री रतन शाह ने राजस्थानी प्रचारिणी सभा व अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंच से राजस्थानी भाषा की मान्यता के कार्य किये। श्री शाह को सम्मेलन की ओर से बधाई।

भोपाल : श्री विष्णु शरण अग्रवाल का सम्मान

वयोवृद्ध श्री विष्णु शरण अग्रवाल का रचनात्मक लेखन तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के गम्भीर अध्ययन पर विवेक भारती न्यास, भोपाल द्वारा एक सादे गरिमामय विशिष्ट समारोह में शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के पूर्व राज्यपाल डॉ. भाई महावीर, अध्यक्ष तथा रामकृष्ण मिशन के स्वामी आत्मभोलानंद जी, मध्य प्रदेश के परिवहन

मंत्री उमाशंकर गुप्ता विशेष अतिथि थे। वरिष्ठ साहित्यकार तथा न्यास के संयोजक डॉ. देवेन्द्र दीपक ने कार्यक्रम का संचालन किया। समारोह में कुलपति प्रो. आर.के. सिंह, डॉ. के.सी. गुप्ता, न्यास के सचिव कमल प्रेमचंदानी, डॉ. रघुवीर प्रसाद गोस्वामी आदि अनेक विद्वान गणमान्य उपस्थित थे।

भागलपुर : कुंजबिहारी झुनझुनवाला डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बने

भागलपुर जिला अग्रवाल सम्मेलन के महामंत्री श्री कुंजबिहारी झुनझुनवाला लायन्स अंतर्राष्ट्रीय जिला ३२२ ई के 'डिस्ट्रिक्ट गर्वनर' के पद पर सर्व सम्मति से निर्वाचित किये गये। श्री झुनझुनवाला बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के वंशानुगत सदस्य हैं। ये पूर्व में ईस्टर्न बिहार चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के सचिव, रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य, मारवाड़ी कॉलेज छात्र संघ के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

'ताजा खबर' को बधाई

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कलकत्ता टीवी से हिन्दी में प्रसारित होने वाली ताजा खबर की एक वर्ष की पूर्ति पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं

तूलिका और अध्यात्म के मौन समन्वयक : प्रो प्रीतम लालशर्मा

जयपुर निवासी वयोवृद्ध कुशलहस्त चित्रकार प्रीतम लाल शर्मा ने १९५ पातंजलि योगसूत्रों पर आधारित चित्र बनाए हैं जो योग की बोधगम्य-अभिव्यक्ति है। ७७ वर्षीय श्री शर्मा १९४७ से १९८९ ई. तक पिलानी बिड़ला इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साईंस में भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर रहे हैं। अलवर (राजस्थान) में जन्म एवं विद्या अध्ययन के दौरान ही मिनिएचर पेंटिंग से अपनी यात्रा प्रारम्भ करके अमूर्त चित्रकला से आध्यात्मिकता को जोड़ चुके हैं। १९५ पातंजलि योग-सूत्रों को उकेरने में उन्हें १५ वर्ष का समय लगा। कला, प्रकृति, प्रतिकृति और मानवीय आवेगों (हर्ष-शोक-आक्रोश) एवं मुद्राओं के चित्रण में ये सिद्धप्राप्त हैं।

श्री शर्मा श्री घनश्याम दास बिड़ला से स्वर्ण पदक प्राप्त कर सम्मानित हो चुके हैं।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

कोलकाता : आचार्य विष्णुकांत शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित

हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल एवं साहित्य मनीषि आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका स्वर्गीय शास्त्री के निवास स्थान पर गये एवं उनके पार्थिव शरीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की। शोकाकुल पुत्री व परिजनों से मिलकर उन्हें साहस, धैर्य एवं सांत्वना प्रदान की। श्री शर्मा ने बताया कि स्व. शास्त्री बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं उनका मारवाड़ी सम्मेलन से अंतरंग लगाव था। उनके आकस्मिक निधन से साहित्य गगन का एक दैदीप्यमान सितारा अनन्त में विलीन हो गया है।

स्व. शास्त्री ने १९५२ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर एम.ए. किया और उसके बाद १९५३ में एलएलबी की उपाधि प्राप्त की। कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक, बाद में सीनेट के सदस्य तथा हिन्दी विभाग में रीडर रहे। १९७७ से १९८२ पश्चिम बंगाल विधानसभा जोड़ासांकू क्षेत्र से विधायक रहे। स्व. शास्त्री ने हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद को भी सुशोभित किया। इन्हें कानपुर विश्वविद्यालय एवं काशी हिन्दु विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट की उपाधि प्रदान की गई। स्व. शास्त्री बड़ा बाजार कुमारसभा पुस्तकालय, प्रख्यात नाट्य संस्था अनामिका आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष पद पर भी रहे। अनेक साहित्यिक रचनाओं से इन्होंने हिन्दी साहित्य को अमूल्य निधि दी है।

जमशेदपुर : श्री चिमनलाल भालोटिया पंचतत्व में विलीन

१७ फरवरी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य जमशेदपुर के उद्योगपति श्री चिमनलाल भालोटिया का ६८ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनकी अंतिम यात्रा में सभी समुदाय से हजारों की संख्या में लोग शरीक थे एवं सैकड़ों संस्थाओं ने शोक संदेश भेजकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद ने स्व. भालोटिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को संजीवित रखने हेतु एक स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन का संकल्प लिया है। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना है।

कोलकाता : श्रीमती बीना अग्रवाल (गोयल) का स्वर्गारोहण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य श्री राजेश अग्रवाल की माता एवं श्री बांके बिहारी अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती बीना अग्रवाल का १८ मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। ईश्वर से दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इस विछोह वेदना को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।●

एक मुख्याध्यापक के नाम पत्र

अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन दुनिया भर के सबसे बड़े राजनेताओं में गिने जाते हैं। उनका लड़का जिस विद्यालय में पढ़ता था उसके मुख्याध्यापक के नाम उन्होंने एक पत्र लिखा था। यह पत्र अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता है और सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। वे कहते हैं, ''मैं जानता हूं कि उसे यह सीखना होगा कि सभी लोग न्यायपरायण नहीं होते, सभी सच्चे नहीं होते, लेकिन उसे यह भी सिखाओ कि हर दुष्ट के मुकाबिले में एक शूरवीर भी होता है, हर स्वार्थी राजनीतिज्ञ के सामने एक समर्पित नेता भी होता है। यदि सिखा सको तो यह भी सिखाओ कि पाये हुए पांच डालरों की तुलना में कमाया हुआ एक डॉलर कहीं अधिक मूल्यवान है, मैं जानता हूं यह कठिन है, उसे खोना भी सिखाओ और जीत का मजा लेना भी। अगर हो सके तो उसे ईर्ष्या से दूर रहना भी सिखाओ, उसे शांत हंसी का रहस्य भी सिखलाओ। उसे छोटी आयु में ही यह भी सिखाओ कि धौंस जमाने वालों को हटाना ज्यादा आसान होता है। अगर तुम सिखा सको तो उसे पुस्तकों का विस्मय भी सिखाओ, लेकिन साथ ही उसे आकाश की पत्तियों, धूप में मधुमक्खियों, हरियालीवाली पहाड़ियों पर फूलों के शाश्वत रहस्य पर सोच-विचार करने के लिए शांत क्षण भी दो।

''विद्यालय में उसे यह सिखाओ कि धोखा देने की अपेक्षा असफल होना कहीं अधिक माननीय है। उसे अपने विचारों पर विश्वास रखना सिखाओ, भले सभी कहते हों कि वे सब गलत हैं। उसे शरीफ लोगों के साथ शरीफ और कठोर लोगों के साथ कड़ा होना सिखाओ। मेरे बेटे को ऐसी शक्ति दो जो भीड़ का अनुकरण न करे, चलती गाड़ी के पीछे न लगे। उसे सभी लोगों की बात पर कान देना सिखाओ पर साथ ही यह भी सिखाओ कि वह जो सुने, सत्य के कपड़े में से छानकर केवल शुभ को ही स्वीकार करे।

''अगर सिखा सको तो दु:ख में हंसना सिखाओ, उसे यह सिखाओ कि आंसू बहाने में कोई शर्म की बात नहीं। उसे दोषदर्शियों पर हंसना और बहुत अधिक मधुरता से सावधान रहना सिखाओ। उसे यह सिखाओ कि अपने हृदय और अपनी आत्मा की कीमत न लगाये परन्तु वह अपने शारीरिक बल और मस्तिष्क को सबसे ऊंची बोली बोलने वाले को बेचे। उसे सिखाओ कि चिल्लाती हुई भीड़ की ओर से अपने कान बंद कर ले और अगर उसे यह ठीक न लगे तो खड़ा होकर सामना करे।

''उसके साथ कोमलता से व्यवहार करो पर बहुत लाड़ न दो, क्योंकि अग्नि-परीक्षा ही इस्पात बनाती है। उसे अधीर होने का साहस दो और साहसी होने का धैर्य दो। उसे अपने ऊपर उत्कृष्ट विश्वास रखना सिखाओ, तभी वह मानवजाति पर उत्कृष्ट विश्वास रख सकेगा।

''यह बहुत कड़ा आदेश है पर देखो तुम क्या कर सकते हो, मेरा बेटा बड़ा अच्छा मुन्ना है।''

Leaders

in construction equipment and infrastructure financing

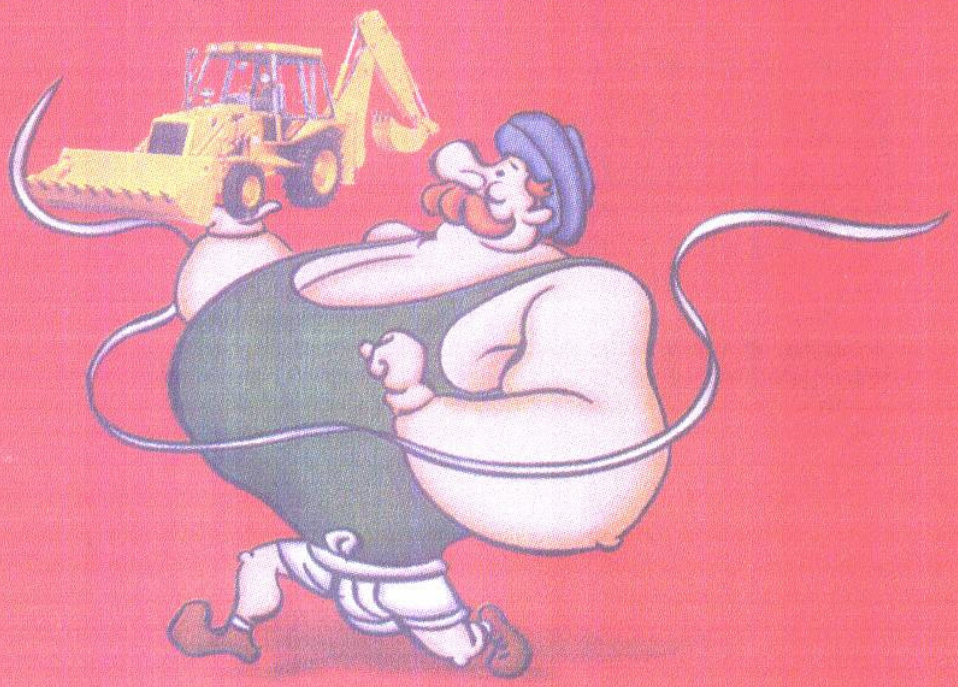

SREI

Srei Infrastructure Finance Limited

'Vishwakarma' 86C, Topsia Road (South), Kolkata-700 046,Tel : +91 33 2285 0112-5/0124-7, Fax : +91 33 22857542/8501,
corporate@srei.com, www.srei.com

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,